खण्ड-'अ'-वस्तुपरक प्रश्न

अध्याय — 1 अपठित गद्यांश व पद्यांश बोध

I. अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिंदु

'अपठित' का सामान्य अर्थ है—'बिना पढ़ा हुआ' अर्थात् जो नियमित अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक का हिस्सा न हो। इस प्रकार 'अपठित' वे रचना-अंश होते हैं, जिन्हें गद्य या पद्य के रूप में हमने पहले न पढ़ा हो। ये विचार प्रधान गद्यांश अथवा काव्यांश होते हैं।

अपठित का महत्त्व

अपठित रचनाओं का अपना विशिष्ट महत्त्व होता है। इसी कारण इन्हें प्रश्न-पत्र का भाग बनाया जाता है।

1. अपठित रचनाएँ भाषा, लेखन-शैली तथा शब्द-भंडार को बढ़ाने में भी सहायक होती हैं। इनके अंतर्गत आने वाले मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ इत्यादि की समझ हमारी भाषिक क्षमता को उत्कृष्ट तथा अभिव्यक्ति क्षमता को उत्तम बनाती है।
2. अपठित बोध से विचार, चिंतन तथा अवलोकन के गुणों का विस्तार होता है। इसके द्वारा विद्यार्थी किसी रचना को समझने तथा उस पर अपने विचार देने में सफल होते हैं।
3. अपठित बोध का अभ्यास स्वाध्याय की भावना विकसित करता है। इससे पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि पैदा होती है।
4. अपठित बोध के अंतर्गत अपठित गद्यांश व काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं।

अपठित गद्यांश का अर्थ

'गद्य का ऐसा अंश, जिसे पहले नहीं पढ़ा गया हो' अपठित गद्यांश कहा जाता है। अपठित गद्यांश का मुख्य उद्देश्य किसी भी विषय को समझने, उसका संपूर्ण अर्थों में विश्लेषण करने तथा भाषा एवं शैली के बीच के संबंधों को खोजने संबंधी विद्यार्थियों की क्षमता को परखना होता है। उन्हें शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ भावार्थ को भी समझना चाहिए। भावार्थ को समझना पाठ बोध के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

पाठ्यपुस्तकों पर आधारित गद्यांशों के उत्तर देना अधिक सरल होता है, किन्तु अपठित गद्यांश का उत्तर देना पठित गद्यांशों की तुलना में कठिन होता है, क्योंकि यह निर्धारित पाठ्यक्रम का अंश नहीं होता है। इस प्रकार के गद्यांश प्राय: हिन्दी की विभिन्न पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों आदि से चुने जाते हैं।

अपठित गद्यांश को समझना

गद्यांश के शाब्दिक अर्थ एवं भावार्थ को ठीक से समझने के लिए भाषा के व्याकरण की जानकारी होना आवश्यक है जिसके लिए विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, प्रविशेषण, विराम-चिह्न प्रयोग, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि का भी समुचित ज्ञान होना आवश्यक है।

अपठित गद्यांश को देने का उद्देश्य

- विद्यार्थियों की अर्थग्रहण क्षमता में वृद्धि हो सके।
- विद्यार्थियों की भाषा एवं शैली के बीच अतंसंबंध एवं अंत: संबंध को खोजने संबंधी क्षमता में वृद्धि की जा सके।
- विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का परीक्षण किया जा सके।
- विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता को समृद्ध किया जा सके।
- विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास किया जा सके।
- विद्यार्थियों की अध्ययनशीलता, एकाग्रता तथा संवेदनशीलता का परीक्षण किया जा सके।

अपठित गद्यांशों को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. दिए गए अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक दो-तीन बार पढ़ना चाहिए। इससे उस गद्यांश का मूल भाव समझने में आसानी रहेगी।
2. गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों तथा पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उचित विकल्प को रेखांकित कर लेना चाहिए।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश में ही खोजना चाहिए।
4. उत्तर का चयन करते समय प्रसंग को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।
5. शीर्षक का चयन करते समय यह ध्यान रहे कि वह गद्यांश की मूल भावना को प्रकट करता हो।
6. शीर्षक का चयन करते समय प्रथम या अंतिम पंक्ति पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
7. शीर्षक संक्षिप्त, आकर्षक एवं सार्थक होना चाहिए।
8. गद्यांश के प्रसंग में वाक्य अथवा शब्द के अर्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए।

II. अपठित पद्यांश

स्मरणीय बिंदु

अपठित पद्यांश का अर्थ

'कविता का ऐसा अंश, जिसे कभी नहीं पढ़ा गया हो।' अपठित पद्यांश कहा जाता है। अपठित पद्यांश का मुख्य उद्देश्य किसी विषय पर लिखी गई काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ जानना, उन शब्दों एवं पंक्तियों के भाव को समझना, उसका संपूर्ण अर्थों में विश्लेषण करना, काव्य पंक्तियों में निहित काव्य सौंदर्य को समझना, भाषा एवं शैली की पहचान करना आदि से संबंधित विद्यार्थियों की क्षमता को परखना है।

गद्यांश की तुलना में पद्यांश की भाषा कुछ कठिन होती है, इसलिए विद्यार्थियों को पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना कठिन लगता है। अगर सही तरीके से मस्तिष्क से विचार करेंगे तो उसका अर्थ स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है।

अपठित पद्यांश को समझना

अपठित पद्यांश के अन्तर्गत पद्यांश में निहित भावार्थ को अच्छी तरह से समझकर ही उसके मूल भाव को स्पष्ट कर सकते हैं। पद्यांश के शब्दार्थ एवं भावार्थ को समुचित ढंग से समझने के लिए व्याकरण एवं काव्यगत पक्ष की जानकारी होनी आवश्यक है। विद्यार्थियों को अलंकार, रस, शब्द-शक्ति, काव्यगत विशेषताओं की अच्छी समझ होनी चाहिए।

अपठित पद्यांश को देने का उद्देश्य

- काव्य-पंक्तियों को समझने एवं उनमें छिपे अर्थ को जानने संबंधी विद्यार्थियों की योग्यता को परखा जा सके।
- उनकी भाव ग्रहण क्षमता में वृद्धि हो सके।
- काव्य पंक्तियों में निहित काव्य सौंदर्य की समझ आ सके।
- उनके बौद्धिक स्तर, भाषा एवं शैली का ज्ञान हो सके।
- विद्यार्थियों की अध्ययनशीलता, एकाग्रता, कल्पनाशीलता तथा संवेदनशीलता का परीक्षण किया जा सके।

अपठित पद्यांश को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. अपठित पद्यांश को कम-से-कम दो या तीन बार पढ़ना चाहिए ताकि उसका मूल भाव समझा जा सके।
2. पद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों का अर्थ जानने का प्रयास करना चाहिए।
3. शीर्षक का चयन करते समय ध्यान रहे कि शीर्षक पद्यांश की मूल भावना को प्रकट करता हो।
4. शीर्षक संक्षिप्त, आकर्षक एवं सार्थक होना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक-अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय – 2 'जनसंचार माध्यम'

स्मरणीय बिंदु

संचार की परिभाषा और महत्त्व

संचार के बिना जीवन संभव नहीं है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। इस तरह संचार एक प्रक्रिया है जिसमें कई तत्त्व शामिल हैं।

संचार खत्म होने का अर्थ है-मृत्यु। वैसे तो प्रकृति में सभी जीव संचार करते हैं, लेकिन मनुष्य की संचार करने की क्षमता और कौशल सबसे बेहतर है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में उसकी संचार क्षमता की सबसे बड़ी भूमिका रही है।

संचार के तत्त्व

संचार एक प्रक्रिया है, तो इसका अर्थ यह भी होता है कि इस प्रक्रिया में कई चरण या तत्त्व शामिल हैं। संचार प्रक्रिया की शुरुआत स्रोत या संचारक से होती है। जब संचारक एक उद्देश्य के साथ अपने किसी विचार, संदेश या भावना को किसी और तक पहुँचाना चाहता है तो संचार प्रक्रिया की शुरुआत होती है।

भाषा असल में एक तरह का कूट चिन्ह या कोड है। संदेश को उस भाषा में कूटीकृत या एनकोडिंग करते हैं। यह संचार की प्रक्रिया का दूसरा चरण है। संचारक का एनकोडिंग की प्रक्रिया पर पूरा अधिकार होना चाहिए। प्राप्तकर्ता यानी रिसीवर प्राप्त संदेश का कूटवाचन यानी उसकी डीकोडिंग करता है। डीकोडिंग का अर्थ है प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एक तरह से एनकोडिंग की उल्टी प्रक्रिया है।

संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता की भी अहम भूमिका होती है, क्योंकि वही संदेश का आखिरी लक्ष्य होता है। प्राप्तकर्ता कोई भी हो सकता है। यह कोई एक व्यक्ति या समूह हो सकता है। फीडबैक के अनुसार ही संचारक अपने संदेश में सुधार कर सकता है।

संचार के प्रकार

संचार के कई प्रकार हैं जिनमें मौखिक और अमौखिक संचार के अलावा अंत: वैयक्तिक, अंतरवैयक्तिक, समूह संचार और जनसंचार प्रमुख हैं। जन संचार कई मामलों में संचार के अन्य रूपों से अलग है।

जनसंचार की विशेषताएँ

1. जनसंचार में फीडबैक तुरन्त प्राप्त नहीं होता है।
2. जनसंचार के श्रोताओं, पाठकों और दर्शकों का दायरा बहुत व्यापक होता है।
3. संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीध सम्बन्ध नहीं होता है।
4. प्राप्तकर्ता यानी पाठक, श्रोता और दर्शक संचारक को उसकी सार्वजनिक भूमिका के कारण पहचानता है।
5. जनसंचार के लिए एक औपचारिक संगठन की भी ज़रूरत पड़ती है।

संचार के कार्य

संचार विशेषज्ञों के अनुसार संचार के कई कार्य हैं। जैसे—सूचना, सामाजिक सम्पर्क, अभिव्यक्ति, नियंत्रण आदि। संचार का प्रयोग हम अपनी समस्याओं या किसी चिंत को दूर करने के लिए करते हैं।

जनसंचार के कार्य

1. सूचना देना।
2. शिक्षित करना।
3. मनोरंजन करना।
4. एजेंडा तय करना।
5. निगरानी करना।
6. विचार-विमर्श के लिए मंच तैयार करना।

भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास

भारत में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। जनसंचार माध्यमों का लोगों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों का सचेत होना बहुत जरूरी है। भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा, इंटरनेट आदि के रूप में हुआ है।

अध्याय — 3 पत्रकारिता के विविध आयाम

स्मरणीय बिंदु

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता को विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के अतिरिक्त लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। वर्तमान समय में पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। अब पत्रकारिता का अर्थ है—पाठकों या दर्शकों के समक्ष सब कुछ रखना अर्थात् पाठकों या दर्शकों (दृश्य-श्रव्य माध्यम) को मनोरंज़न, स्वास्थ्य, फिल्म, सौन्दर्य, फैशन, विज्ञान, खेलकूद, कला, संस्कृति आदि के विषय में जानकारी देना तथा पुरुषों एवं महिलाओं, युवक-युवतियों, बालकों, नई-पुरानी पीढ़ी एवं वर्तमान भविष्य के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराना।

पत्रकारिता का क्षेत्र

पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक होने के साथ-साथ चुनौतीपूर्ण भी है। लोकतंत्र के तीनों स्तंभों की निगरानी करने के साथ-साथ उन्हें सचेत करना, जनहित के लिए संघर्ष करना, जनसामान्य का मार्गदर्शन करना, जनहित के कार्य करना आदि इसके दायित्व बन गए हैं।

आज पत्रकारिता एक नए तरह का मिशन है, उसका कोई विकल्प नहीं हो सकता। राष्ट्रीय संकट के समय वह राष्ट्र का सच्चाई से साथ देती है।

पत्रकारिता क्या है?

प्रत्येक व्यक्ति अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानने को उत्सुक रहता है। नवीनतम जानकारी रखना मनुष्य का स्वभाव है। मनुष्य में जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। जिज्ञासा समाचार एवं व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ।

देश-दुनिया में घटने वाली घटनाओं को पत्रकार समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुँचाते हैं। पहले वे सूचनाओं का संकलन करते हैं, फिर उन्हें समाचारों के रूप में ढालकर हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को ही 'पत्रकारिता' कहा जाता है।

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता का सम्बन्ध मुख्य रूप से समाचारों से है, किन्तु इसके अन्य आयाम भी हैं। किसी विचार, टिप्पणी, संपादकीय, लेख, फोटो, कार्टून आदि से सम्बन्धित पत्र भी पत्रकारिता के अन्तर्गत ही आते हैं।

* पत्रकारीय लेखन
* संपादकीय लेखन
* समाचार लेखन

पत्रकारीय लेखन

विभिन्न समाचारों से एक जैसी जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। पाठक कुछ घटनाओं के मामलों में विभिन्न तथ्य एवं विवरण विस्तार से पढ़ना चाहता है, तो कुछ अन्य के सन्दर्भ में उसकी इच्छा केवल यह जानने की होती है कि घटना के पीछे वास्तव में तथ्य क्या है? इसकी पृष्ठभूमि क्या है? समय, विषय एवं घटना के अनुसार पत्रकारिता में लेखन के तरीके बदल जाते हैं।

यही बदलाव पत्रकारिता में कई नए आयाम जोड़ता है। समाचार के अतिरिक्त आलेख, टिप्पणी, संपादकीय, फ़ीचर, कार्टून, रिपोर्ट, फोटो आदि पत्रकारिता के विशेष अंग हैं। समाचार जगत में इसका विशेष स्थान एवं महत्त्व है। इन सबके बिना भी समाचार-पत्र पूरा नहीं हो सकता।

संपादकीय लेखन

समाचार-पत्र या पत्रिका के संपादक के विचार को 'संपादकीय' के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक समाचार-पत्र का संपादक प्रतिदिन किसी-न-किसी ज़्वलंत विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है। संपादकीय के माध्यम से संपादक के निजी विचारों को जानने के अतिरिक्त समाचार-पत्र की नीति, सोच एवं विचारधारा भी स्पष्ट होती है। इस लेख के लिए संपादक स्वयं उत्तरदायी होता है।

संपादकीय के अन्तर्गत किसी घटना पर प्रतिक्रिया, किसी विषय या मुद्दे पर उसके विचार, किसी आन्दोलन या विचारधारा के प्रति प्रेरणा, किसी जटिल स्थिति का विश्लेषण एवं सुझाव, आदि शामिल किए जाते हैं।

एक उच्चस्तरीय संपादकीय में निम्नलिखित गुणों का समावेश अपेक्षित है—

- संपादकीय लेख की शैली प्रभावशाली एवं सजीव होनी चाहिए। संपादकीय की भाषा स्पष्ट, सशक्त एवं प्रखर होनी चाहिए।
- लेखन में हास्य-व्यंग्य का पुट होने पर लेख अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक हो जाता है।
- संपादक की दृष्टि एवं विचार बिल्कुल स्पष्ट, निर्भीक एवं दृढ़ होने चाहिए।

हर बात को उचित ठहराना, लचीला रुख, ढीली-ढाली शैली अंततः किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना आदि संपादकीय लेखन के दोष माने जाते हैं, जिनसे बचने की आवश्यकता है।

समाचार लेखन

समाचार लेखन एक विशिष्ट कला है। श्रेष्ठ समाचार वही है, जो सूचनात्मक हो और उसमें तथ्यों को इस प्रकार संकलित किया गया हो कि पाठक या दर्शक-श्रोता घटित घटना का विवरण सही परिप्रेक्ष्य में समझ सकें। संवाददाता में संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता, भाव-प्रवणता, रचनात्मकता एवं वाग्वैदग्धता जैसे गुणों का होना अनिवार्य है।

समाचार लेखन के आवश्यक तथ्य—समाचार लेखन हेतु निम्न आवश्यक तथ्यों का ध्यान रखा जाना अनिवार्य है—

(i) समाचार लिखने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है।

(ii) समाचार प्राप्त होने के बाद उससे सम्बन्धित अनेक पक्षों एवं तथ्यों को समाहित कर समग्रता के साथ लिखना अपेक्षित है।

समाचार लेखन में चार 'सकारों' का ध्यान रखना अपेक्षित है।

(क) सत्यता—समाचार सच्चाई पर आधारित होना चाहिए।

(ख) स्पष्टता—समाचार अपने अर्थ को सरलता से समझा सके।

(ग) संक्षिप्तता—समाचार को अति विस्तार से नहीं लिखना चाहिए।

(घ) सुरुचि—समाचार की भाषा-शैली एवं प्रस्तुति रोचक होनी चाहिए।

(iii) समाचार अनुच्छेदों में विभाजित होना चाहिए।

(iv) अनुच्छेद न तो अधिक बड़े और न ही अति संक्षिप्त या लघु होने चाहिए।

(v) एक अनुच्छेद में यथा सम्भव एक ही आयाम या पक्ष होना चाहिए।

(vi) समाचार में शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

(vii) समाचार लेखन में शब्दों का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(viii) समाचार की भाषा में सामासिकता का गुण विद्यमान होना चाहिए।

समाचार लेखन के प्रकार

समाचार लेखन के दो प्रकार होते हैं—

1. स्तूपी—इस पद्धति में कम महत्त्वपूर्ण समाचारों को पहले तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समाचार को अंत में लिखा जाता है। यह स्वरूप अधिक लोकप्रिय नहीं है।

2. विलोम स्तूपी—समाचार लेखन में पहले महत्त्वपूर्ण तथ्यों को लिखा जाता है और उसके बाद घटते महत्त्व एवं प्रासंगिकता के अनुसार अन्य तथ्यों को लिखा जाता है। इसमें प्रथम अनुच्छेद में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बातें तथा अन्तिम अनुच्छेद में कम महत्त्व के तथ्यों को लिखा जाता है। यह पद्धति समाचार लेखन में अत्यधिक लोकप्रिय है।

इसका प्रमुख दोष यह है कि यह घटना को निश्चित क्रम में प्रस्तुत नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इसमें पुनरावृत्ति होने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है।

समाचार के प्रकार

मुख्य रूप से समाचार चार प्रकार के होते हैं—

1. राष्ट्रीय, 2. अन्तर्राष्ट्रीय, 3. प्रादेशिक, 4. स्थानीय।

समाचार लेखन के विभिन्न चरण

1. शीर्षक—समाचार लेखन करते हुए सर्वप्रथम समाचार को शीर्षक देना चाहिए जिसमें मुख्य घटना का सांकेतिक उल्लेख होना चाहिए।

- शीर्षक संक्षिप्त, सरल, सार्थक एवं स्पष्ट होना चाहिए।
- शीर्षक में यदि नाम दिया जाना जरूरी हो, तो महत्त्वपूर्ण तथा विख्यात व्यक्ति का नाम दिया जाना चाहिए।
- शीर्षक समाचार का 'प्रवेश द्वार' माना जाता है। शीर्षक की उपयुक्तता समाचार के महत्त्व को बढ़ाती है।

2. स्रोत—शीर्षक के पश्चात् समाचार के स्रोत का उल्लेख करना चाहिए।

जैसे—* हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा।

* व्यक्तिगत संवाददाता द्वारा।

- समाचार प्रदाता ऐजेंसियाँ। * समाचार ब्यूरो।

(स्रोत के अन्तर्गत स्थान और व्यक्ति दोनों का उल्लेख करने में सामान्यत: समाचार ज्यादा विश्वसनीय हो जाता है।)

3. आमुख—आमुख को 'मुखड़ा' यानी इन्ट्रो (Intro) या 'लीड' (Lead) भी कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमुख में समाचार के सम्बन्ध में तीन प्रश्न क्या, कहाँ एवं कब (?) का परिचय दिया जाता है। कभी-कभी आमुख के अन्तर्गत कौन, क्यों तथा कैसे (?) जैसे प्रश्नों का उत्तर देना भी ज़रूरी हो जाता है।

- आमुख सारगर्भित, संक्षिप्त तथा ठोस होना चाहिए।
- समीक्षकों के अनुसार, आमुख 30–35 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

- आमुख में किन्तु, परन्तु, लेकिन जैसे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। ये शब्द आमुख को अव्यवस्थित तथा अयथार्थपरक बना देते हैं।

4. बॉडी या कलेवर—'आमुख' या 'इंट्रो' के पश्चात् समाचार का शेष भाग समाचार का बॉडी या कलेवर कहलाता है।

5. संक्षेपण—अंत में सम्पूर्ण समाचार का संक्षिप्त सार दिया जाना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 : पद्य भाग

अध्याय — 4 काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. हम तौ एक एक करि जांनां

—कबीर

पाठ परिचय

भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है अर्थात् उनका अपनी वाणी पर पूरा नियंत्रण था। वे अपनी बात को साफ़ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे, 'बन पड़े तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।'

निराकार ब्रह्म के उपासक कबीर की रचनाओं में नाथों, सिद्धों एवं सूफी-संतों का प्रभाव दिखता है। अनपढ़ कबीर किताबी ज्ञान की अपेक्षा आँखों देखे सत्य एवं अनुभव को प्रमुखता देते हैं और इसे ही प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्ष्य (साखी) कहते हैं। यह ज्ञान उन्होंने देशाटन एवं सत्संग से प्राप्त किया। कर्मकांड के विरोधी समाज सुधारक कबीर जाति-भेद, वर्ण-भेद, संप्रदाय-भेद, आदि की निंदा करते हुए प्रेम, सद्भाव एवं समानता का समर्थन करते थे।

पदों का सार

1. हम तो एक.....कहै कबीर दिवांनां।।

जयदेव सिंह एवं वासुदेव सिंह द्वारा संकलित-संपादित 'कबीर वाङ्मय-खंड 2' (सबद) से लिए गए दोनों पदों में से पहले पद में कहा गया है कि कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है। आत्मा परमात्मा का ही एक रूप है, आत्मा परमात्मा का ही एक अंश है जो लोग इन दोनों को अलग-अलग समझते हैं, उन्होंने इनकी वास्तविकता को पहचाना ही नहीं। कबीर ने वायु, जल व प्रकाश के उदाहरण से एकता के स्वरूप को दर्शाया है। सभी के हृदय में परमात्मा आत्मा के रूप में समाया हुआ है, पर अलग-अलग स्वरूप धारण किए हुए है। संपूर्ण संसार माया से ग्रस्त है। जो मनुष्य माया के बंधन से मुक्त हो जाता है, वह निर्भय हो जाता है, तब उसे किसी का भी भय नहीं सताता। कबीरदास जी ने स्वयं को निर्भय बना लिया है। मोह-माया के जाल में फँसकर, निर्भय होकर संसार में विचरण करते हैं।

2. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई

—मीरा

पाठ परिचय

सगुण भक्ति काव्यधारा की कृष्ण भक्ति काव्य से जुड़ी महत्त्वपूर्ण भक्त कवयित्री मीरा भगवान कृष्ण को ही अपना आराध्य एवं पति मानती रहीं। उनका विश्वास था कि महापुरुषों के साथ संवाद (अर्थात् सत्संग) से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से मुक्ति मिलती है। इसी परिप्रेक्ष्य में अन्य भक्तिकालीन कवियों की तरह मीरा ने भी दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। उन्होंने लोक-लाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक एवं वैचारिक बंधनों का हमेशा विरोध किया। न तो पर्दा प्रथा का पालन किया और न ही मंदिरों में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस की। इस अर्थ में रूढ़ियों से ग्रस्त तत्कालीन युग के समाज में वे स्त्री मुक्ति की आवाज़ बनकर उभरीं।

मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। उनकी कविता का प्रधान गुण सादगी एवं सरलता है। कला का अभाव ही उसकी सबसे बड़ी कला है। मीरा की कविता के मूल में दर्द है। नरोत्तम दास स्वामी द्वारा संकलित-संपादित 'मीरा मुक्तावली' से लिए गए दोनों पदों में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त किया है।

पदों का सार

1. मेरे तो गिरधर.....प्रेम-बेलि बोयी। (i)

मीरा कहती हैं कि मेरे तो गिरधर गोपाल (कृष्ण) ही सब कुछ हैं, किसी अन्य से मेरा कोई संबंध नहीं है। सिर पर मोर-मुकुट धारण करने वाले कृष्ण मेरे पति हैं। उनको पाने के लिए मैंने कुल की मर्यादा को भी छोड़ दिया है, अब चाहे कोई कुछ भी कहे। संत-महात्माओं और ज्ञानी महापुरुषों के साथ सत्संग में बैठ-बैठकर मैंने लोक-लाज भी खो दी है। मैंने बड़े यत्नपूर्वक अपने आँसुओं के जल से सींच-सींचकर कृष्ण भक्ति की प्रेम बेल को बोया है।

अबत बेलि.....तारो अब मोही। (ii)

मीरा कहती हैं कि मैंने अपने आँसुओं के जल से सींच-सींच कर अपने प्रेम की बेल को सींचा है। अब तो यह प्रेम की बेल पूरी तरह फैल गयी है। कृष्ण भक्ति मेरे मन में रच-बस गई है। अब, इससे मुझे आनंद मिलता है। मैंने संसार का चिंतन करके, उसे मथ कर उसमें छिपी हुई घी रूपी कृष्ण भक्ति का सार निकाल लिया है और व्यर्थ की सांसारिकता को छाछ मानकर छोड़ दिया है। भक्तों को देखकर मीरा खुश होती हैं, परंतु व्यर्थ के कार्यों में लिप्त व्यक्तियों को देखकर दु:खी हो रोती हैं। मीरा स्वयं को कृष्ण की दासी बताकर, उनसे अपना उद्धार करने की प्रार्थना करती हैं।

3. घर की याद

—भवानी प्रसाद मिश्र

पाठ परिचय

कविता और साहित्य के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी करने वाले प्रमुख कवियों में शामिल भवानी प्रसाद मिश्र की कविता हिन्दी की सहज लय की कविता है। वास्तव में, सहज लेखन एवं सहज व्यक्तित्व का नाम ही है—भवानी प्रसाद मिश्र। इस सहजता का संबंध गाँधी जी के चरखे की लय से भी जुड़ता है, इसीलिए उन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। सहजता और लोक के अत्यधिक करीब रहने वाले भवानी प्रसाद मिश्र जिस विषय को भी उठाते हैं, उसे अत्यंत घरेलू बना देते हैं—आँगन के पौधे के साथ-साथ शाम एवं दूर दिखती पहाड़ की नीली चोटी भी जैसे परिवार का अंग हो जाती है। वृद्धावस्था और मृत्यु को भी आत्मीय स्वर देने वाले भवानी प्रसाद मिश्र ने प्रौढ़ प्रेम की कविताएँ भी लिखी हैं, जिनमें उद्दाम श्रृंगारिकता की अपेक्षा सहजीवन के सुख-दु:ख एवं प्रेम की व्यंजना है।

प्रस्तुत कविता 'घर की याद' में घर के मर्म का उद्घाटन हुआ है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से दूर होने की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। वस्तुत: घर की अवधारणा की सार्थक एवं मार्मिक स्मृति ही प्रस्तुत कविता की केन्द्रीय संवेदना है।

कविता का सार

1. 'आज पानी गिर.....पूर है जो,'

बरसात के दिनों में कवि अपने घर-परिवार को याद कर रहा है। ऐसे समय में उसे खुशियों से भरे अपने घर की याद आ रही है।

2. ' घर कि घर.....भाई प्यार बहिनें,'

कवि के चार भाई हैं तथा चार बहनें हैं। उसकी विवाहिता बहन भी घर आई हुई है। उसका घर खुशियों से भरा हुआ है। सभी के बीच प्यार का गहरा संबंध है।

3. 'और माँ बिन.....उसका पत्र पाता।'

जेल में कवि को अपनी माँ की याद आ रही है। अपनी अनपढ़, परंतु स्नेहमयी माता का स्नेह कवि जेल में भी महसूस कर रहा है।

4. 'पिताजी जिनको.....में झंझा लरजता'

कवि अपने पिता की बात करते हुए कह रहा है कि यद्यपि वह बूढे हो चुके हैं, परंतु उनका मन अभी बूढ़ा नहीं हुआ है। वे हँसमुख स्वभाव के हैं तथा उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण उनकी उम्र किसी कार्य में बाधा नहीं बनती।

5. 'आज गीता पाठ.....तिर रहा है'

कवि कहता है जब पिताजी गीता पाठ करके तथा नियमित व्यायाम करके आए होंगे, तब मुझे याद करके उनकी आँखें भर आई होंगी।

6. 'चार भाई चार.....का नाम लेकर'

कवि के पिताजी अपने सभी बच्चों को देखकर प्रसन्न होते हैं, परंतु बुढ़ापे पर भी विजय पाने वाले उसके पिताजी कवि की याद में रो पड़े होंगे।

7. 'पाँचवाँ मैं हूँ.....बैठा हूँ अभागा'

पिताजी अपने पाँचवें बेटे 'कवि' को सोने पर सुहागा कहते थे, परंतु आज वह अपने घर से दूर जेल में अभागा बना बैठा है।

8. **'और माँ ने.....लीक ही है'**
ऐसे कठिन समय में माँ, पिताजी को ढाँढ़स बँधा रही होगी और कह रही होगी कि वह आपके सिखाए आदर्शों पर चल रहा है। उसके लिए कर्त्तव्य-मार्ग ही महत्त्वपूर्ण है।

9. **'पाँव जो पीछे.....खोता, कहाँ हूँ'**
उसकी माँ कहती है कि यदि वह ऐसा न करता, तो हमें लज्ज़ित करता। आप धीरज रखो। तब पिताजी ने भी सँभलकर कहा होगा कि मैं अपना धीरज नहीं खो रहा हूँ।

10. **'हे सजीले हरे.....सब विरस है'**
कवि कहता है कि मैं यहाँ (जेल में) वियोग भुगत रहा हूँ, जो नरक के समान है, परंतु हे सावन! तुम संदेशवाहक बनकर मेरे पिता तक यह संदेह पहुँचाओ कि मैं यहाँ सुख से हूँ।

11. **'किंतु उनसे यह.....कुछ शोक कहना'**
कवि सावन को यह कहता है कि तुम मेरे पिताजी को मेरे आनंद का संदेश देना। उनके सामने मेरे दुख की बातें प्रकट न करना।

12. **'और कहना मस्त.....अस्त हूँ मैं'**
हे सावन! तुम मेरे पिताजी को कहना कि मैं यहाँ मज़े में हूँ, खूब खेलता-कूदता हूँ और मेरा वजन भी बढ़ गया है। मेरी निराशा की बातें उनसे न कहना।

13. **'हाय रे, ऐसा.....वे न तरसें'**
कवि सावन से कहता है कि तुम मेरे आनंद का समाचार पिताजी को देना, जिससे वे मेरी फिक्र न करें। उनके सामने सच्चाई व्यक्त न करना।

4. चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

—त्रिलोचन

पाठ परिचय

प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि त्रिलोचन रागात्मक संयम और लयात्मक अनुशासन के कवि होने के साथ-साथ बहुभाषाविद शास्त्री भी हैं, लेकिन यह शास्त्रीयता (पंडिताई) उनकी कविता के लिए बोझ नहीं बनती। प्रबल आवेग एवं त्वरा की अपेक्षा जीवन में निहित मंद लय के कवि हैं त्रिलोचन। उनकी भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है और उसका ठाठ ठेठ गाँव की ज़मीन से जुड़ा हुआ है। अंग्रेज़ी के सॉनेट (छंद) को हिन्दी में स्थापित करने का श्रेय कवि त्रिलोचन को ही जाता है। उनका कवि श्रदय बोलचाल की भाषा को चुटीला एवं नाटकीय बनाकर कविताओं को एक नया आयाम देता है। कवि वस्तु (कथ्य) एवं रूप (शिल्प) की प्रस्तुति के बीच किसी तरह की फाँक की गुंजाइश नहीं छोड़ता।

त्रिलोचन की 'धरती' काव्य संग्रह में संकलित कविता 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। अक्षरों के लिए प्रयुक्त किया गया 'काले काले' विशेषण एक ओर शिक्षा व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करते हैं, तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराते है, जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं।

काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषण व्यवस्था के खिलाफ खड़ी हो जाती है, जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है। कलकत्ते पर 'बज़र' गिरने की चंपा द्वारा की गई कामना वास्तव में जीवन के खुरदरे यथार्थ के प्रति चंपा के संघर्ष एवं जीवन को प्रकट करती है।

कविता का सार

1. **चंपा काले काले.....चरवाही करने जाती है।**
कवि ने चंपा के माध्यम से गाँव में रहने वाली अनपढ़ लड़कियों की स्थिति का वर्णन किया है। चंपा को काले-काले अक्षरों से भिन्न-भिन्न स्वरों के निकलने से आश्चर्य होता है। उसे पढ़ना पसंद नहीं, वह तो चौपायों की चरवाही करती है।

2. **चंपा कहती है.....मैं तो नहीं पढ़ूँगी।**
चंपा की पढ़ाई में बिल्कुल रुचि नहीं है। वह एक चंचल, नटखट और अच्छी लड़की है, इसलिए पढ़ते समय कवि की कभी कलम चुरा लेती है, तो कभी कागज़। कवि उसे पढ़ने की प्रेरणा देता है। इसके लिए इस गाँधीजी के प्रभाव का भी इस्तेमाल करता है, लेकिन चंपा किसी भी तरह पढ़ने के लिए तैयार नहीं है।

3. **मैंने कहा कि चंपा.....कलकत्ते पर बजर।**
चंपा के पढ़ाई करने से मना करने पर कवि उसे प्यार से समझाता है तथा पढ़ाई का महत्त्व बताते हुए कहता है कि इससे विवाह के बाद पति को पत्र भेजने और उसके द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़ने में सहायता मिलेगी। चंपा कहती है कि वह अपने पति को अपने पास ही रखेगी। वह नौकरी करने कलकत्ता गया, तो ऐसे कलकत्ता पर वज्र गिरे, उसका सर्वनाश हो, क्योंकि कलकत्ता के कारण ही मेरा पति मुझसे अलग होगा और मुझे पढ़ने की ज़रूरत भी पड़ेगी।

5. गज़ल

—दुष्यंत कुमार

पाठ परिचय

गज़ल की विधा को हिन्दी में अकेले अपने दम पर प्रतिष्ठित करने वाले दुष्यंत कुमार ने साहित्यिक गुणवत्ता से समझौता न करते हुए भी लोकप्रियता के नए प्रतिमान कायम किए। उनके कई शेर साहित्यिक एवं राजनीतिक जमावड़ों में लोकोक्तियों की तरह दुहराए जाते हैं। गज़ल एक ऐसी विधा है, जिसमें सभी शेर अपने आप में पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते हैं। उन्हें किसी क्रम व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती। आमतौर पर गज़ल के शेरों में केन्द्रीय भाव का होना आवश्यक नहीं है।

प्रस्तुत गज़ल एक खास मन:स्थिति में लिखी गई जान पड़ती है, जो दुष्यंत कुमार के गज़ल संग्रह 'साये में धूप' से ली गई है। इस गज़ल में राजनीति एवं समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करने तथा विकल्प की तलाश को मान्यता देने का भाव केन्द्रीय सूत्र बन गया है।

कविता का सार

1. **कहाँ तो तय था.....भर के लिए।**

कवि राजनीतिज्ञों द्वारा निर्मित समाज की दुरावस्था पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि राजनीतिज्ञों ने बड़े-बड़े सपने दिखाए थे। हर घर के लिए एक चिराग का वादा किया गया था, लेकिन यहाँ तो एक पूरे शहर के लिए भी चिराग उपलब्ध नहीं है। यहाँ जिन पर जनकल्याण का दायित्व है, वही भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इन्हीं से जनसामान्य को दु:ख पहुँचता है। लोग इतने संतोषी हो गए हैं कि अत्यंत अभावों के बीच रहते हुए भी किसी से शिकायत नहीं करते, संघर्ष की बात तो बहुत दूर है। ऐसे लोगों के कारण ही कुशासन करने वाले लोगों को प्रोत्साहन मिलता है। मनुष्य को हमेशा एक बेहतर भविष्य की कल्पना करते हुए उसका स्वप्न देखना चाहिए।

2. **वे मुतमइन हैं.....गुलमोहर के लिए।**

कवि उन लोगों पर कटाक्ष करते हुए कहता है कि जो यह मानते हैं कि पत्थर नहीं पिघल सकता, वे वास्तव में संघर्ष करने से पहले ही अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं। कवि का मानना है कि दृढ़ संकल्प करने वाले मनुष्य के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं होता। कवि आशान्वित है कि कभी-न-कभी उसकी आवाज़ लोगों तक पहुँचेगी और उनकी स्थितियाँ बदलेंगी।

शायर का कहना है कि व्यवस्था चलाने वाला शासक वर्ग उसकी आवाज़ पर प्रतिबंध लगा सकता है, लेकिन इसके बावजूद जनता में जागृति लाने के लिए इस तरह की रचनाएँ आवश्यक हैं। हमारा जीवन तभी सार्थक होगा, जब हम संघर्ष करते हुए शोषित समाज को शोषण से बचा सकें। जिएँ तो समाज के लिए और मरें भी तो समाज की खातिर ही, जनकल्याण की खातिर ही।

6.
(i) हे भूख! मत मचल
(ii) हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर

—अक्कमहादेवी

पाठ परिचय

इतिहास में वीर शैव आंदोलन से जुड़ी महत्त्वपूर्ण कवयित्री अक्क महादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज़ है और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अज़स्र प्रेरणा स्रोत भी। उन्होंने अपने व्यावहारिक जीवन में एकांगी मर्यादाओं और केवल स्त्रियों के लिए निर्मित नियमों का तीखा विरोध किया। कन्नड़ भाषा में 'अक्क' शब्द का अर्थ बहन होता है। इस 'अक्क' की सक्रियता के कारण शैव आंदोलन से बड़ी संख्या में स्त्रियाँ (जिनमें अधिकांशत: निचले तबकों से थीं) जुड़ीं तथा अपने संघर्ष एवं यातना को कविता के रूप में अभिव्यक्ति दी।

अक्क महादेवी अपने आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन देव (शिव) के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त करते हुए एक ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं, जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए।

कविता का सार

1. **हे भूख! मत.....लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का।**

कवयित्री यह जानती है कि विकार रहित मन ही ईश भक्ति में सहायक होता है, इसीलिए वह सभी चर और अचर पदार्थों से कहती है कि शिव भक्ति का जो अवसर तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ में न जाने दो। अपने आप पर भूख, प्यास, नींद, क्रोध, मोह, लोभ, मद, ईर्ष्या, आदि को हावी मत होने दो, क्योंकि ये सभी प्रभु भक्ति में बाधाएँ हैं।

2. **हे मेरे जूही.....छीन ले मुझसे।**

प्रस्तुत वचन में कवयित्री सांसारिकता को पूरी तरह से त्याग कर, अपनी 'मैं' अहंकार की भावना को मिटा देना चाहती है। इसके लिए वह अपने जूही के फूल के समान कोमल, मनोहर, दयालु और उपकारी ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मुझसे तुच्छ-से-तुच्छ कार्य करवाओ। मुझे भीख माँगनी पड़े और माँगने से भीख भी न मिले। यदि मिल भी जाए तो कोई कुत्ता उसे झपटकर ले जाए और मेरी झोली खाली ही रह जाए। इससे मुझे अपने अस्तित्व का स्मरण होगा और मैं तुम्हें (ईश्वर को) पाने के योग्य हो जाऊँगी।

7. सबसे खतरनाक

—अवतार सिंह पाश

पाठ परिचय

समकालीन पंजाबी साहित्य के महत्त्वपूर्ण कवि अवतार सिंह पाश की कविताएँ विचार एवं भाव के सुन्दर संयोजन से बनी गहरी राजनीतिक कविताएँ हैं, जिनमें लोक संस्कृति और परंपरा का बोध मिलता है। पाश जनसामान्य की घटनाओं पर 'आउटसाइडर' की तरह प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते, बल्कि इनकी कविताओं में वह व्यथा, निराशा और गुस्सा नज़र आता है, जो गहरी संपृक्तता के बगैर संभव ही नहीं है।

प्रस्तुत कविता 'सबसे खतरनाक' दिनों-दिन अधिकाधिक नृशंस एवं क्रूर होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है, जहाँ प्रतिकूलताओं से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथराई आँखों-सी तटस्थता से कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है, जहाँ आत्मा के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

कविता का सार

1. **मेहनत की लूट.....सबसे खतरनाक नहीं होता।**

कवि ने देशवासियों को जागने का संदेश देते हुए उन्हें कुछ खतरनाक स्थितियों से परिचित कराया है। कवि का मानना है कि मेहनत की कमाई लुट जाना, पुलिस की मार सहना, धोखा देना, गद्दारी करना, क्रोध या गुस्सा पी जाना आदि बुरी स्थितियाँ हैं, लेकिन सबसे अधिक खतरनाक नहीं। बैठे-बिठाए पकड़े जाना, सहमे हुए चुपचाप रहना, सही होते हुए भी दब जाना, साधनविहीनता की स्थिति में जीवन गुजारना, क्रोध करके भी शांत रहना सब बुरी स्थितियाँ हैं, लेकिन सबसे खतरनाक स्थिति नहीं है।

2. **सबसे खतरनाक होता है.....आपकी निगाह में रुकी होती है।**

कवि कहता है कि सबसे खतरनाक स्थिति है-मुर्दों की तरह शांत हो जाना यानि गतिहीन, जड़ हो जाना, हमारे सपनों का मर जाना, स्वयं को एक ही जगह स्थिर कर लेना। कवि का मानना है कि जब हम गतिहीन, संवेदनहीन एवं अकर्मण्य हो जाते हैं, तब सबसे खतरनाक स्थिति होती है।

3. **सबसे खतरनाक वह आँख.....मिर्ची की तरह नहीं गड़ता है।**

कवि का कहना है कि चेतनाहीन जीवन निरर्थक है जो दृष्टि जमी हुई बर्फ़ की तरह स्थिर है, वह सबसे खतरनाक है, क्योंकि उसमें केवल दोहराव है, नवीनता एवं उमंगें नहीं हैं।

वह चाँद भी खतरनाक है, जो प्रत्येक हत्याकांड का गवाह रहता है, लेकिन तब भी वह अपनी चाँदनी बिखेरता रहता है। ऐसे चाँद की चाँदनी तो आँखों में मिर्ची की तरह चुभनी चाहिए।

4. **सबसे खतरनाक वह गीत.....चौगाठों पर चिपक जाते हैं।**

कवि का कहना है कि जो गीत हमारे कानों तक करुण गीत बनकर पहुँचे, वह गीत सबसे खतरनाक होता है। करुण गीत सभी को डराता है, उन पर अत्याचार करता है। वह रात सबसे खतरनाक होती है, जिसमें सिर्फ उल्लू बोलते हैं और गीदड़ हुआँ-हुआँ करके सबको डराते हैं। ऐसी डरावनी रातों से जीवन अंधकार से भर जाता है, जिसे दूर करना कठिन हो जाता है।

5. **सबसे खतरनाक दिशा.....सबसे खतरनाक नहीं होती।**

कवि कहता है कि सबसे खतरनाक वह दिशा होती है, जिसमें आत्मा रूपी सूरज डूब जाता है यानि जो लोग आत्मा की आवाज़ अनसुनी करते हैं, वही लोग खतरनाक हैं। रूढ़िग्रस्त विचारधारा जो हमसे चिपककर हमारी पहचान बन जाए, वह सबसे खतरनाक होती है। मेहनत की कमाई की लूट, पुलिस की मार, लोभ के कारण भ्रष्टाचार या गद्दारी सबसे खतरनाक स्थितियाँ नहीं होती हैं।

8. आओ, मिलकर बचाए

—निर्मला पुतुल

पाठ परिचय

आदिवासी समाज की विसंगतियों को तल्लीनता से उकेरने वाली कवयित्री निर्मला पुतुल की कविताओं के केन्द्रों में कड़ी मेहनत के बावज़ूद खराब दशा, कुरीतियों के कारण बिगड़ती पीढ़ी, थोड़े लाभ के लिए बड़े समझौते, पुरुष वर्चस्व, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि, शिक्षित समाज का दिक्कुओं एवं व्यवसायियों के हाथों की कठपुतली बनना आदि स्थितियाँ अपने पैनेपन के साथ मौजूद हैं।

निर्मला पुतुल आदिवासी जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से कलात्मकता के साथ हमारा परिचय कराती हैं तथा संथाली समाज के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं को बेबाकी से सामने रखती हैं। संथाली समाज में जहाँ एक ओर सादगी, भोलापन, प्रकृति से जुड़ाव और कठोर परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्त्व हैं, वहीं दूसरी ओर उसमें अशिक्षा, कुरीतियाँ एवं शराब की ओर बढ़ता झुकाव भी है। निर्मला पुतुल की 'आओ, मिलकर बचाएँ' कविता में इन दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण हुआ है।

कविता का सार

वृहत्तर संदर्भ में 'आओ, मिलकर बचाएँ' कविता समाज में उन चीज़ों को बचाने की बात करती है, जिनका होना स्वस्थ सामाजिक-प्राकृतिक परिवेश के लिए आवश्यक है। प्रकृति के विनाश एवं विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है , जो कविता का मूल स्वर है।

1. **अपनी बस्तियों को नंगी होने.....भाषा में झारखंडीपन।**

कवयित्री अपने परिवेश को शहरों की अपसंस्कृति से बचाने का प्रयास कर रही है। वह अपनी संस्कृति को अमर्यादित होने से बचाने का आह्वान करती है। वह धरती को वृक्षविहीन होने से बचाना चाहती है। वह अपनी संस्कृति एवं भाषा को बचाना चाहती है। वह झारखंडीपन अर्थात् झारखंड की जीवन-शैली एवं मानसिकता को बचाना चाहती है।

2. **ठंडी होती दिनचर्या में.....फसलों की लहलहाहट।**

कवयित्री का मानना है कि आज के लोगों की ज़िन्दगी में उत्साह एवं जोश नहीं रहा। सभी को अपने भीतर के उत्साह को बचाए रखना चाहिए। संथाली आदिवासियों की पहचान, उनके दिल में छिपी आग अर्थात् उत्साह, धनुष की डोर पर चढ़ा तीर और कंधे पर लटकती कुल्हाड़ी वाली संस्कृति को बचाने की आवश्यकता है। संथाली बस्तियों की ताज़ी हवा, नदियों की पवित्रता, पहाड़ों का मौन, गीतों की मीठी धुन, मिट्टी की सौंधी महक और लहलहाती फसलों को बचाने की आवश्यकता है।

3. **नाचने के लिए खुला.....पहाड़ों की शांति।**

कवयित्री कहती है कि झारखंड के जीवन में मौजूद नाच-गाना, मौज़-मस्ती के उल्लास, जीवन की खुशी, खिलखिलाहट, रोने के लिए थोड़ा एकांत, बच्चों के खेलने के लिए मैदान, पशुओं के लिए चरागाह , बूढ़ों के लिए पहाड़ी का शांत वातावरण आदि को बचाने की ज़रूरत है।

4. **और इस अविश्वास भरे.....अब भी हमारे पास।**

कवयित्री का कहना है कि आज हमारे चारों ओर अविश्वास का वातावरण है, लेकिन अभी भी थोड़ा-सा विश्वास बचा है, जिसे बचाने की आवश्यकता है। आशा एवं विश्वास को बनाए रखना आवश्यक है। पृथ्वी एवं प्रकृति को प्रदूषण से बचाना आवश्यक है। अभी भी हमारे पास बहुत कुछ बचा है, जिसे हम सबको मिलकर बचाना होगा। हमें अपनी संस्कृति को बचाना होगा।

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 1 : गद्य भाग

अध्याय — 5 गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

(ब) गद्य भाग

1. नमक का दारोगा

—प्रेमचंद

पाठ परिचय

हिन्दी कथा-साहित्य के शिखर पुरुष प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के कारण सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया, लेकिन उनका लेखन कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। उनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष उनकी रचनाओं में सामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों था। प्रेमचंद पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने कहानी एवं उपन्यास की विधा को कल्पना एवं रूमानियत के धुँधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस ज़मीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की ज़मीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परंपरा से भी जुड़ी। उनके यहाँ हिंदुस्तानी (हिन्दी-उर्दू मिश्रित) भाषा अपने पूरे ठाट-बाट तथा जातीय स्वरूप के साथ आई है।

प्रेमचंद 'पंचपरमेश्वर' जैसी कहानी तथा 'सेवासदन' जैसे उपन्यास के साथ सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यथार्थवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए। **आदर्शोन्मुख यथार्थवाद** स्वयं प्रेमचंद की गढ़ी हुई संज्ञा है, जो कहानी एवं उपन्यास के क्षेत्र में ऐसे रचनात्मक प्रयासों पर लागू होती है, जिसमें कटु यथार्थ का चित्रण करते हुए भी समस्याओं एवं अंतर्विरोधों को अंततः एक आदर्शवादी एवं मनोवांछित समाधान तक पहुँचा देती है। इसका सबसे आदर्श उदाहरण प्रस्तुत बहुचर्चित कहानी 'नमक का दारोगा' है।

यह वास्तव में धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है। इस कहानी के अंतिम प्रसंग से पहले तक की समस्त घटनाएँ प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार की व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता को अत्यंत मनोवैज्ञानिक तरीके से उजागर करती हैं, लेकिन कहानी का अंत सत्य की जीत के साथ होता है। यह कहानी मानवीय मूल्यों में आस्था उत्पन्न करने वाली आशावादी कहानी है, जिसमें सत्यनिष्ठा, धर्मपरायणता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा को सम्मानित किया गया है।

पाठ का सार

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित 'नमक का दारोगा' नामक कहानी मानव-मूल्यों में आस्था जगाने वाली आशावादी कहानी है। इसमें सत्यनिष्ठा, धर्मपरायणता और कर्त्तव्यनिष्ठा को सम्मानित किया गया है और उसे विश्व के दुर्लभ गुणों के रूप में व्याख्यायित किया गया है। कहानी का सार इस प्रकार है—

कहानी का प्रारंभ नमक के विभाग की चर्चा से होता है। यह एक ऐसा विभाग है जिसमें नौकरी पाने के लिए सभी प्रयासरत् रहते हैं। मुंशी वंशीधर अपनी पढ़ाई समाप्त करके नौकरी की खोज में निकलते हैं। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे अत: अपने पुत्र को घर की दशा बताते हुए समझाते हैं कि उसकी नौकरी लगना बहुत ज़रूरी है। वह उसे ऐसा काम ढूँढ़ने को कहते हैं जिसमें ऊपरी आय भी हो, क्योंकि उनका मानना है कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वंशीधर अपने पिताजी की बातें सुनकर और आशीर्वाद लेकर नौकरी की तलाश में निकलते हैं। भाग्य से उसकी नौकरी नमक विभाग में दारोगा के पद पर लग जाती है, जिसकी खबर सुनकर उसके पिता बहुत खुश होते हैं, क्योंकि इस पद में अच्छे वेतन के साथ ऊपरी आय भी थी।

मुंशी वंशीधर ने अपनी कार्यकुशलता और अच्छे व्यवहार से सभी को मोह लिया था। एक रात वे जमुना नदी पर पहरा दे रहे थे। तभी उन्हें गाड़ियों की गड़गड़ाहट और मल्लाहों की आवाज़ें सुनाई दीं। वे फौरन हाथ में तमंचा लिए उस ओर गए। वहाँ गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल पार कर रही थी। मुंशी जी ने डाँटते हुए पूछा, किसकी गाड़ियाँ हैं? एक आदमी ने जवाब दिया—दातागंज के पंडित अलोपीदीन की। मुंशी वंशीधर चौंक पड़े। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। उनका लाखों रुपयों का लेन-देन था और क्षेत्र में बहुत नाम था। फिर वंशीधर को पता चला कि गाड़ियों में नमक भरा है। उन्होंने गाड़ियाँ रोक लीं। यह खबर पंडित जी के पास पहुँची। उन्हें धन की ताकत पर पूर्ण विश्वास था अत: धन के नशे में चूर वह घटनास्थल पर पहुँचे। उन्होंने वंशीधर से बड़ी ही चालाकी से पूछा—बाबूजी, गाड़ियाँ क्यों रोक दीं ? लेकिन वंशीधर ने स्पष्ट कहा कि सरकारी हुक्म है। अब पंडित जी ने रिश्वत का जाल फेंका लेकिन वंशीधर उसमें न फँसे और उन्हें गिरफ़्तार करने का हुक्म दिया। पंडित अलोपीदीन स्तंभित हो गए। यह उनके जीवन का पहला अवसर था। जब धर्म, धन का ऐसा निरादर कर रहा था। फिर भी उन्होंने एक प्रयास और किया और अपने आदमी को वंशीधर को रुपए देने को कहा। लेकिन वंशीधर ने उन्हें निराश ही किया। उन्होंने धन की मात्रा को और बढ़ाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ अंतत: पंडित जी को गिरफ़्तार कर लिया गया। अगले दिन यह खबर चारों ओर आग की तरह फैल गई। पंडित अलोपीदीन के हाथों में हथकड़ियाँ लगाकर अदालत में लाया गया। उन्होंने हृदय में ग्लानि, क्षोभ अथवा लज्जा के कारण गरदन झुका रखी थी। चारों ओर हलचल मची हुई थी। लेकिन अदालत पहुँचने पर उन्हें सहानुभूति मिलने लगी। वहाँ मौज़ूद अफ़सर अमले, चपरासी, चौकीदार सभी जो धन के भक्त थे उन्हें बचाने के लिए वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन का युद्ध होने वाला था। दूसरी ओर वंशीधर अकेले सत्य के बल पर वहाँ मौज़ूद थे। लेकिन उन्हें न्याय अपने से दूर दिख रहा था। न्याय के उस मंदिर में तो पक्षपात की आँधी चल रही थी। उनकी सोच सही ही साबित हुई। मुकदमा प्रारंभ हुआ और अलोपीदीन के विरुद्ध कोई ठोस प्रमाण न होने के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया। उल्टा वंशीधर को उसकी उद्दंडता और विचारहीनता की दुहाई देकर भविष्य में होशियार रहने की चेतावनी दी गई।

इस फैसले से सभी प्रसन्न हो गए। अलोपीदीन मुस्कुराते हुए बाहर निकले। वंशीधर जब बाहर निकले तो उन्हें चारों ओर से व्यंग्यबाणों की बौछार सहनी पड़ी। आज उन्हें एक खेदज़नक अनुभव हुआ था। उन्होंने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना तो अनिवार्य था। एक सप्ताह के भीतर उनकी नौकरी से छुट्टी हो गई। यह उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा का दंड ही था। घर पहुँचे तो पिता की ढेरों कटु बातें सुननी पड़ीं। वृद्ध माता को भी बहुत दु:ख हुआ और पत्नी ने तो कई दिनों तक सीधे मुँह बात तक न की। इसी तरह एक सप्ताह बीत गया। शाम का समय था। वंशीधर के पिता बैठे राम-नाम की माला जप रहे थे। तभी वहाँ राज-सी ठाट-बाट के साथ पंडित अलोपीदीन पहुँचे। उन्हें देखकर मुंशी जी ने दौड़कर दंडवत किया और लल्लो-चप्पो की बातें करने लगे। साथ ही अपने बेटे को भी कोसने लगे, लेकिन पंडित जी ने उन्हें ऐसा कहने से रोका और बोले—कुलतिलक और पूर्वजों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें? फिर वे वंशीधर से बोले कि मैंने हज़ारों रईस देखे और कई उच्च पदाधिकारियों से काम कराए। मैंने सबको अपने धन के बल पर गुलाम बनाया लेकिन आपने मुझे परास्त कर दिया इसलिए मैं आपसे कुछ प्रार्थना करना चाहता हूँ। वंशीधर ने अलोपीदीन का सत्कार स्वाभिमानपूर्वक किया। वह समझ रहे थे कि पंडित जी उन्हें लज्ज़ित करने आए हैं लेकिन उनकी बातें सुनीं तो मन का मैल मिट गया और शरमाते हुए बोले—यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी वह मेरे सिर-माथे पर। यह सुन अलोपीदीन ने अपनी प्रार्थना स्वीकारने की बात कहते हुए एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और वंशीधर को उस पर हस्ताक्षर करने को कहा। पंडित जी उन्हें अपनी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करना चाहते थे और बदले में अच्छा वेतन, भत्ता और अनेक सुविधाएँ देना चाहते थे। वंशीधर ने जब यह सब पढ़ा तो आँखों में आँसू भर कंपित स्वर में बोले—पंडित जी, मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ। अलोपीदीन ने हँसकर कहा—मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।

वंशीधर ने फिर कहा कि मुझमें इतनी बुद्धि, विद्या नहीं है, जो ऐसा महान् कार्य कर सकूँ। लेकिन अलोपीदीन ने कलम उन्हें पकड़ाते हुए कहा कि मुझे विद्वता, मर्मज्ञता, अनुभव और कार्य-कुशलता की चाह नहीं है, मुझे वह मोती मिल गया है जिसके आगे योग्यता और विद्वता की चमक फीकी है इसलिए बिना समय नष्ट किए दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरब्बत, उद्दंड, कठोर परन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे। वंशीधर की आँखें भर आईं। उन्होंने पंडित जी की ओर भक्ति और श्रद्धा से देखा और काँपते हाथों से उस कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने खुशी से उन्हें गले लगा लिया।

2. मियाँ नसीरुद्दीन

—कृष्णा सोबती

पाठ परिचय

हिन्दी के साहित्यिक संसार में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति दर्ज कराने वाली लेखिका कृष्णा सोबती की कृति 'हम-हशमत' का संस्मरण के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान है। कम लेखन को विशिष्ट लेखन मानने वाली कृष्णा सोबती ने अपने संयमित लेखन के बावज़ूद अनेक कालज़यी रचनाएँ लिखीं। भारत-पाकिस्तान पर लिखी उल्लेखनीय रचनाओं में यशपाल के 'झूठा-सच', राही मासूम रज़ा के 'आधा गाँव' और भीष्म साहनी के 'तमस' के साथ-साथ कृष्णा सोबती का 'ज़िन्दगीनामा' एक विशिष्ट उपलब्धि है। साहित्य अकादमी सम्मान, शलाका सम्मान आदि से सम्मानित कृष्णा सोबती ने अपनी साफ़-सुथरी रचनात्मकता से एक नया पाठक वर्ग निर्मित किया है। कृष्णा सोबती के भाषिक प्रयोग में भी विविधता है। उन्होंने हिन्दी की कथा-भाषा को एक विलक्षण ताज़गी दी है। संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन और पंजाबी की ज़िन्दादिली, ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में मौज़ूद हैं।

पाठ का सार

आधुनिक हिन्दी में नई पीढ़ी की सुप्रसिद्ध कथा-लेखिका कृष्णा सोबती के 'हम हशमत' नामक शब्द चित्र से संकलित 'मियाँ नसीरुद्दीन' एक बड़ा सजीव और मनोरंजक रेखाचित्र है। इसमें लेखिका ने पुरानी पीढ़ी के बूढ़े नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की स्वभागवत खूबियों को बड़ी रोचकता से और साफ़-साफ़ उभारा है। इसका सार निम्न प्रकार है—

मियाँ नसीरुद्दीन खानदानी नानबाई हैं। लेखिका एक दिन दोपहर के समय जामा मस्ज़िद के आड़े पड़े मटियामहल के गढ़ैया मुहल्ले की तरफ वहाँ एक छोटी-सी दुकान पर पटापट आटे का ढेर सनते देखकर रुक गई। पूछने पर पता चला कि यह खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान है। मियाँ छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं।

लेखिका ने अन्दर झाँका तो मियाँ नसीरुद्दीन उन्हें ग्राहक समझकर बोले —फरमाइए। लेखिका ने उनसे कुछ सवाल पूछने के लिए आग्रह किया। मियाँ ने पूछा कि तुम अखबारनवीस तो नहीं हो। उत्तर न में मिलने पर मियाँ ने प्रश्नों के उत्तर देने के लिए हाँ कर दी। लेखिका ने पूछा—तरह-तरह की रोटियाँ बनानी आपने कहाँ से सीखीं? मियाँ नसीरुद्दीन ने क्रोधित नज़रों से लेखिका को देखा और कहा कि नानबाई इल्म लेने कहीं और जाएगा? उस नगीनासाज़ के पास? क्या आईनासाज के पास? क्या मीनासाज़ के पास? आदि.....। यह तो हमारा खानदानी पेशा है। मैंने जो भी सीखा, अपने पिता से ही सीखा। हमारे पिता का स्वर्गवास हो जाने पर हम उनके ठीये पर आकर बैठ गए।

लेखिका ने प्रश्न किया—आपके पिता.....

मियाँ ने जवाब दिया—हमारे वालिद साहिब मशहूर थे मियाँ बरकत शाही नानबाई गढैयावाले के नाम से और हमारे दादा आला नानबाई मियाँ कल्लन।

लेखिका ने पूछा—आपको इन दोनों में से किसी की भी कोई नसीहत याद हो।

मियाँ ने कहा—काम करने से आता है नसीहतों से नहीं।

लेखिका ने कहा—तो मियाँ आपने सीधे ही नानबाई का हुनर सीख लिया?

मियाँ बोले—पहले बर्तन धोना सीखा, भट्टी बनाना सीखा, आँच देना सीखा।

कहने लगे—'तालीम की तालीम भी बड़ी चीज़ होती है।' पहले हमने खोंमचा लगाया, तभी आज यहाँ बैठे हैं।

लेखिका ने पूछा—क्या यहाँ और भी नानबाई हैं?

मियाँ ने कहा—बहुतेरे, पर खानदानी नहीं, कहने लगे कि हमारे बुजुर्गों से बादशाह सलामत ने यूँ कहा—मियाँ नानबाई कोई ऐसी चीज़ बनाओ जो न आग से पके न पानी से बने? उन्होंने ऐसी चीज़ बनाई जो बादशाह सलामत ने खूब खाई और खूब सराही गपकवान का नाम पूछने पर कहने लगे—हम नाम नहीं बताएँगे—कहा गया है खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है।

लेखिका ने फिर पूछा—आपके बुजुर्गों ने शाही बावर्ची खाने में काम तो किया होगा?

मियाँ ने कहा—कह दिया ना कि बादशाह सलामत के हुक्म पर पकवान बनाए जाते थे?

लेखिका—दिल्ली के किस बादशाह के यहाँ आपके बुजुर्ग काम किया करते थे?

इस पर मियाँ खीज गए और कहा—

जहाँपनाह बादशाह सलामत के यहाँ।

लेखिका—कौन बहादुरशाह जफर कि.....

मियाँ—आपने बादशाह के नाम चिट्ठी रुक्का भेजना है क्या? फिर मियाँ अपने शार्गिद को भट्टी सुलगाकर काम करने के लिए कहता है।

लेखिका के मन में बहुत से और प्रश्न आए कि पूछ ले आपके बेटे-बेटियाँ हैं। पर मियाँ नसीरुद्दीन के चेहरे पर अलग तरह की रंगत देखकर प्रश्न न पूछने का फैसला किया।

लेखिका ने पूछा—यहाँ इस भट्टी पर कौन-सी रोटियाँ पका करती हैं?

मियाँ ने कहा—बाकराखानी, शीरमाल, ताफतान, बेसनी, खमीरी, रुमाली, गाँव, दीदा, गाजेबान, तुनकी, आदि।

एकाएक मियाँ की आँखों के आगे कुछ कौंध गया और कहने लगे—'उतर गए वे जमाने और गए वे कद्रदान जो पकाने-खाने की कद्र करना जानते थे। मियाँ अब क्या रखा है—निकाली तन्दूर से—निगली और हज़म।'

3. अपू के साथ ढाई साल

—सत्यजित राय

पाठ परिचय

भारतीय सिनेमा को कलात्मक ऊँचाई प्रदान करने वाले फ़िल्मकारों में सत्यजित राय अगली कतार में हैं। इनके निर्देशन में पहली फ़ीचर फ़िल्म पथेर पांचाली (बांग्ला) 1955 में प्रदर्शित हुई, उसने राय को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला भारतीय निर्देशक बना दिया था।

पाठ का सार

'अपू के साथ ढाई साल नामक संस्मरण पथेर पांचाली फ़िल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फ़िल्म के इतिहास में एक बहुत बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फ़िल्म के सृजन और उसके व्याकरण से सम्बन्धित कई बारीकियों का पता चलता है, यही नहीं, जो फ़िल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चुंधियाती हुई जान पड़ती है, उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है, जिसमें साधनहीनता के बीच अपनी कलादृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। इस पाठ का भाषांतर बांग्ला मूल से विलास गिते ने किया है।

लेखक को इस बात का डर था कि समय बीतने के साथ-साथ अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे ज़्यादा बड़े न दिखने लगें। शूटिंग की शुरूआत कलकत्ता से सत्तर मील दूर पालसिट नाम के गाँव में हुई। सीन बहुत बड़ा था, जिसकी शूटिंग एक दिन में होनी नामुमकिन थी। लेखक को बाकी अंश की शूटिंग अगले साल शरद ऋतु में करनी पड़ी जब वह मैदान काशफूलों से भर गया। इस सीन की शूटिंग में पहली बार लेखक ने तीन रेलगाड़ियों का इस्तेमाल किया। लेखक के पास पर्याप्त पैसों का भी अभाव रहता था। पैसे के अभाव के कारण फ़िल्म में भूलों कुत्ते के आधे सीन को चित्रित कर बीच में छोड़ दिया गया। फ़िल्म में श्रीनिवास की भूमिका निभाने वाले कलाकार की भी बीच में ही अचानक मौत हो गई। गाँव में शूटिंग करते समय लेखक का अनेक लोगों से परिचय हुआ। जिस घर में फ़िल्म की शूटिंग चल रही थी, उसका मालिक कलकत्ता में रहता था। उस घर में एक ऐसा भी कमरा था जहाँ बैठकर साउंड रिकार्डिंग का काम किया जाता था। फ़िल्म की शूटिंग पूरी होने के दौरान कई ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, जो लेखक के लिए परेशानी का कारण बनीं, यह फ़िल्म लोगों को बहुत पसन्द आई।

4. `विदाई–संभाषण

—बालमुकुंद गुप्त

पाठ परिचय

खड़ी बोली और आधुनिक हिन्दी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक बालमुकुंद गुप्त नवजागरण के सहित्य पत्रकार थे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता संग्राम का हथियार थी। यही कारण है कि उनके लेखन में निर्भीकता पूरी तरह मौज़ूद है। भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी के रूप में माने जाने वाले बालुमुकुंद गुप्त की रचनाओं में व्यंग्य-विनोद का पुट दिखाई देता है। रचनाओं में मौज़ूद उनकी व्यंग्य-विनोद का पुट वास्तव में ब्रिटिश शासन की दमन नीति का मुकाबला करने की सोची-समझी रणनीति थी, जो तत्कालीन समय के अन्य रचनाकारों में भी कमोवेश दिखाई देती है।

प्रस्तुत पाठ 'विदाई-संभाषण' बालमुकुंद गुप्त की सर्वाधिक चर्चित व्यंग्य कृति 'शिवशंभु के चिट्ठे' का एक अंश है, जो वायसराय लार्ड कर्ज़न के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। वायसराय कर्जन सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे, जिन्होंने हर स्तर पर अंग्रेज़ों का वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश की। बालमुकुंद गुप्त की रचनाओं में विनोदप्रियता, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा प्रयोग एवं रवानगी का उल्लेखनीय नमूना दिखाई पड़ता है।

पाठ का सार

'विदाई-संभाषण' निबन्धकार बाल मुकुंद गुप्त द्वारा लिखित व्यंग्यात्मक निबंध है। इसमें ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन की इंग्लैंड-वापसी पर व्यंग्य किया गया है। उन्हें भारत-विरोधी कार्य करने के लिए लज़्ज़ित किया गया है। निबन्ध का सार इस प्रकार है—

लेखक लॉर्ड कर्जन के शासन काल की समाप्ति पर उसे कहता है कि अब तुम्हारा समय पूरा हो गया है, अब तुम इस देश (भारत) से चले जाओगे। तुमने क्या कभी ऐसा सोचा था कि इतनी जल्दी तुम गद्दी छोड़ दोगे, न ही यहाँ की जनता ने ऐसा सोचा होगा, परन्तु भगवान को सब मालूम है, उससे कुछ नहीं छिपा रह सकता।

लेखक आगे लॉर्ड कर्जन को बिछुड़ने का दर्द बताता है कि बिछुड़ना बहुत कठिन है जब आप दूसरी बार इस देश के वायसराय बने थे तो जनता अधिक प्रसन्न नहीं थी। वह चाहती थी कि आप यहाँ से चले जायें। परन्तु आज जब आप जा रहे हैं हमें तो खुशी न होकर दु:ख हो रहा है क्योंकि बिछुड़ना बहुत करुणाजनक होता है, पवित्र, निर्मल व कोमल होता है। बिछुड़ते समय बैर भाव समाप्त होकर शांति रस उत्पन्न हो जाता है। तुम्हारा देश देखने का सौभाग्य मुझे (लेखक को) प्राप्त ही नहीं हुआ परन्तु इस देश के पशु-पक्षी भी बिछुड़ते समय उदास हो जाते हैं। इसे लेखक दो गायों के उदाहरण द्वारा स्पष्ट करता है।

लेखक कहता है कि इस देश में कई शासक आए व गए, आना जाना तो चलता ही रहता है, परंतु आपका जाना बहुत दु:खी करने वाला है क्योंकि आपको स्वयं ही नहीं मालूम था कि आपका शासन समाप्त होने वाला है, अत: आप का जाना अथवा बिछुड़ना जनता को तो दर्द देगा ही आप को भी उतना ही दर्द झेलना पड़ेगा। आपने न जाने क्या-क्या वादे किए थे, क्या-क्या इरादे आपने जाहिर किए थे किंतु आप एक भी वादा पूरा नहीं कर पाए, इसका दु:ख जनता को तो है ही पर सुख से आप भी नहीं जा पायेंगे। इस बार आपने अपना बिस्तर गरम राख पर रखा है और भारतवासियों को गर्म तवे पर पानी की बूँदों की भाँति नचाया है। न स्वयं खुश हो सके न प्रजा को सुखी होने दिया।

आपकी इस देश में कितनी शान थी, आपकी व आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी, इस देश के सब रईसों ने आपको सलाम पहले किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था, ईश्वर के बाद इस देश में आपका ही दर्ज़ा था परन्तु अब, आप सिर के बल पर नीचे आ गिरे, आपको स्वयं ही पद त्याग करना पड़ रहा है। इस देश के हाकिम आपकी ताल पर नाचते थे, राजा-महाराजा डोरी हिलाने से सामने हाथ बाँधे हाजिर होते थे। आपके एक इशारे में प्रलय होती थी। कितने ही मिट्टी-काठ के खिलौने आपकी कृपा के जादू से बड़े-बड़े पदाधिकारी बन गए। आज इतने बड़े महा लॉर्ड का यह दर्जा हुआ कि फ़ौजी अफसर उनके इच्छित पद पर नियत न हो सका और उनको उसी गुस्से के मारे इस्तीफा दाखिल करना पड़ा, वह भी मंजूर हो गया।

आपका इतना ऊँचा चढ़कर गिरना यहाँ के निवासियों को दु:खी कर रहा है, गिरकर पड़ा रहना उससे भी अधिक दुखित करता है। आपको अपनी दशा पर कितनी घृणा आती है, इस बात के जान लेने का इन देशवासियों को अवसर नहीं मिला। लेखक लार्ड कर्जन को याद दिलाता है कि क्या आपने कोई भी ऐसा कार्य किया जो प्रजा के हित में हो या आपने अपने शासक होने का कोई दायित्व निभाया? आपने आँख बंद करके मनमाने हुक्म ही चलाये हैं, प्रजा की किसी बात को कभी भी नहीं सुना। कैसर, जार, नादिरशाह के उदाहरण देते हुए लेखक कहता है कि इन्होंने फिर भी कभी कुछ तो प्रजा की सुनी परन्तु आपने तो आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाने पर कभी कोई ध्यान नहीं दिया। आपका यदि एक छोटा-सा कहा नहीं माना गया तो आपने पद छोड़ने की बात कह दी।

यहाँ की प्रजा ने आपकी जिद्द का फल यहाँ देख लिया कि जिस जिद्द ने इस देश की प्रजा को पीड़ित किया, आपको भी उसने कम पीड़ा न दी, आप स्वयं उसके शिकार हो गए। यहाँ की प्रजा वह प्रजा है जो अपने दु:ख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। यहाँ की शिक्षित जनता तो क्या अनपढ़ गूँगी प्रजा के नर सुल्तान नाम के एक राजकुमार का गीत गाया जाता है। एक बार उसने अपने ऊपर आयी विपत्ति के समय नरवरगढ़ नाम के एक स्थान पर दिन काटे थे, वहाँ चौकीदार से लेकर उसे एक ऊँचे पद तक काम करना पड़ता था। उस नगर से विदा होते समय उसने कहा—प्यारे नरवरगढ़! मेरा प्रणाम ले। आज मैं तुझसे जुदा होता हूँ, तू मेरा अन्नदाता है। अपनी विपद में दिन मैंने तुझमें काटे हैं।

.... यहाँ की स्त्रियों को माता व बहन की दृष्टि से न देखा हो तो मेरा प्रणाम न ले नहीं तो ..... मुझे जाने की आज्ञा दे।

लेखक आगे कहता है कि क्या आप भारत के लिए कह सकेंगे—अभागे भारत! मैंने तुझसे सब प्रकार का लाभ उठाया, तेरी बदौलत वह शान देखी, जो इस जीवन में असंभव है। तूने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा, पर मैंने तेरा बिगाड़ने में कुछ कमी न की। संसार के सबसे पुराने देश। जब तक मेरे हाथ में शक्ति थी, तेरी भलाई की इच्छा मेरे जी में न थी। अब कुछ शक्ति नहीं है, तेरे लिए कुछ कर सकूँ। पर आशीर्वाद करता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से लाभ करे। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझें। मगर आप में इतनी उदारता कहाँ? यह कटाक्ष भरे कथन कह कर लेखक पाठ समाप्त कर देता है।

5. गलता लोहा

—शेखर जोशी

पाठ परिचय

हिन्दी साहित्य के नई कहानी आंदोलन के बीच उभरी प्रतिभाओं में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है। उनकी कहानियाँ 'नई कहानी' आंदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी कहानियों में समाज का मेहनतकश एवं सुविधा विहीन तबका जगह पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक नुक्तों को पकड़ते एवं प्रस्तुत करते हैं। उनके रचना संसार से गुज़रते हुए समकालीन जनजीवन की बहुविध विडम्बनाओं को महसूस किया जा सकता है। ऐसा करने में उनकी प्रगतिशील जीवन दृष्टि और यथार्थ बोध का अत्यधिक योगदान रहा है। समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी करने वाली प्रस्तुत कहानी 'गलता लोहा' इस बात का उदाहरण है कि शेखर जोशी के लेखन में अर्थ की गहराई का दिखावा एवं बड़बोलापन जितना ही कम है, गांभीर्य उतना ही अधिक।

पाठ का सार

नई कहानी के सशक्त कहानीकार शेखर जोशी की कहानियों में आधुनिक जीवन के यथार्थ का मार्मिक चित्रण हुआ है। 'गलता लोहा' में उन्होंने जातीय अभिमान के पिघलने और उसे रचनात्मक कार्य में ढलते दिखाया है। कहानी का सार इस प्रकार है–

मोहन (पुरोहित वंशीधर का पुत्र) लम्बा बेंट वाला हँसुआ (दराँती) लेकर खेत के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काटने के लिए घर से बाहर निकला। पुरोहित वंशीधर निष्ठावान व संयमी व्यक्ति थे, परन्तु अब बुढ़ापे में उतना कठिन श्रम व व्रत उपवास नहीं कर पाते थे। आज उन्हें गणनाथ में जाकर चन्द्रदत्त नामक यजमान के यहाँ रुद्रीपाठ करना था परन्तु दो मील की सीधी चढ़ाई करके उनके घर जाना वंशीधर के बस की बात अब नहीं थी।

मोहन इन सभी बातों को समझता था लेकिन इस तरह के अनुष्ठानों का उसे अभ्यास नहीं था। मोहन को लगा कि दराँती की धार अब काम करने योग्य नहीं है।

मोहन के सहपाठी मित्र धनराम का आफर (भट्टी) रास्ते में ही था। वह उस ऑफर पर दराँती की धार तेज़ करवाने हेतु गया और कनस्तर पर बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे उसकी कारीगरी को पारखी नज़र से देख रहा था।

मोहन व धनराम अपने बचपन को याद करते हुए स्कूली समय में की गई शैतानियों, कहानियों, मास्टरों की बातों में खो गए। मोहन ने 'धनराम से पूछा–मास्टर त्रिलोक सिंह तो अब गुजर गए होंगे। धनराम ने कहा–हाँ पिछले वर्ष ही गुजरे, आखिरी दम तक उनकी छड़ी का डर लगा रहता था।' दोनों विद्यालय की बातों में लग गए। मास्टर जी आवाज़ देकर अवश्य पूछते थे–'मोहन नहीं आया आज?'

मोहन मास्टर जी का चहेता शिष्य था। मास्टर ने उसे स्कूल का मॉनीटर बना रखा था। वही सुबह-सुबह 'हे प्रभो आनन्द दाता! ज्ञान हमको दीजिए' का पहला स्वर उठाकर प्रार्थना शुरू करता था। कक्षा में किसी छात्र को कोई सवाल न आने पर वे मोहन से पूछते और उनका अनुमान सही निकलता। विद्यालय के कमज़ोर छात्रों को दण्ड देने का भार भी उन्होंने मोहन पर डाल रखा था। वे आदेश देते थे–'पकड़ इसका कान, और लगवा इससे उठक-बैठक।' धनराम भी उन अनेक छात्रों में से एक था जिसने मास्टर त्रिलोक सिंह के आदेश पर अपने हमजोली मोहन के हाथों कई बार बेंत खाए थे या कान खिंचवाए थे। फिर भी धनराम मोहन से प्रेम करता था।

मास्टर त्रिलोक सिंह हमेशा कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल का और उनका नाम ऊँचा करेगा।

धनराम केवल तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाया था। एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा न सुना पाने के कारण छड़ी से मार खानी पड़ी थी। जब छुट्टी के समय तक तेरह का पहाड़ा याद न हुआ तो मास्टर साहब ने कहा–'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा, इसमें?'

धनराम जब हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था तो उसके पिता गंगाराम ने उसे लोहे का काम सिखाना प्रारम्भ कर दिया था। एक दिन अचानक गंगाराम चल बसे तो धनराम ने सहज़ भाव से उनकी विरासत सम्भाल ली।

प्राइमरी स्कूल की सीमा लाँघते ही मोहन ने छात्रवृत्ति प्राप्त कर त्रिलोक सिंह मास्टर की भविष्यवाणी को किसी हद तक सिद्ध कर दिया तो वंशीधर तिवारी का हौंसला भी बढ़ गया। वे भी अपने पुत्र को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाने के स्वप्न देखने लगे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि मोहन पढ़-लिखकर वंश का दारिद्र्य मिटा दे।

आगे की पढ़ाई के लिए जो स्कूल था वह गाँव से चार मील की दूरी पर था तथा रास्ते में एक नदी पड़ती थी। फिर भी वंशीधर ने हिम्मत नहीं हारी और लड़के का नाम स्कूल में लिखा दिया। मोहन लम्बा रास्ता तय करके स्कूल जाता और छुट्टी के बाद थका-माँदा घर लौटता। वर्षा के दिनों में नदी पार करने की कठिनाई को देखते हुए वंशीधर ने नदी पार के गाँव में एक यजमान के घर पर मोहन का डेरा तय कर दिया था और छुट्टियों में नदी का पानी जब उतर जाता तो वह गाँव लौट आता था। एक बार जब मोहन घर लौट रहा था तो नदी पार करते समय नदी का पानी बढ़ गया, बड़ी कठनाई से वह सकुशल घर पहुँचा। इस घटना के बाद वंशीधर घबरा गए और बच्चे के भविष्य को लेकर चिंतित रहने लगे।

बिरादरी के एक सम्पन्न परिवार का युवक रमेश उन दिनों लखनऊ से छुट्टियों में गाँव आया हुआ था। बातों-बातों में वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के सम्बन्ध में उससे अपनी चिंता प्रकट की तो उसने न केवल अपनी सहानुभूति जताई बल्कि सुझाव दिया कि वे मोहन को उसके साथ ही लखनऊ भेज दें। घर में जहाँ चार प्राणी हैं एक और बढ़ जाने से कोई अन्तर नहीं पड़ता, बल्कि बड़े शहर में रहकर यह अच्छी तरह पढ़-लिख सकेगा।

वंशीधर को जैसे रमेश के रूप में साक्षात भगवान मिल गए हों। अब लखनऊ में मोहन की ज़िंदगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ। घर की दोनों महिलाएँ जिन्हें वह चाची व भाभी कहता था, का हाथ बंटाने के अतिरिक्त धीरे-धीरे वह मुहल्ले की सभी चाचियों व भाभियों के लिए काम-काज में हाथ बँटाने का साधन बन गया।

रमेश दफ़्तर में बड़ा बाबू था उसके समक्ष मोहन की हैसियत एक घरेलू नौकर की थी। उसका नाम साधारण-से स्कूल में लिखवा दिया गया। एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। गर्मियों की छुट्टी में उसे कभी-कभी गाँव जाने का मौका मिलता। मोहन ने भी परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। घरवालों को वास्तविक स्थिति बतलाकर दु:खी नहीं करना चाहता था।

आठवीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त कर छुट्टियों में मोहन गाँव आया हुआ था जब वह छुट्टियों के बाद लखनऊ पहुँचा तो उसने अनुभव किया कि रमेश के परिवार के सभी लोग उसकी आगे की पढ़ाई के पक्ष में नहीं हैं। उसको हाथ का काम सिखाने हेतु किसी तकनीकी स्कूल में भर्ती करवा दिया। दो वर्ष का यह समय भी बीत गया। मोहन नौकरी के लिए चक्कर काटने लगा।

जब वंशीधर को वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो उन्हें बहुत दु:ख हुआ। त्रिलोक सिंह मास्टर की बातों के साथ-साथ बचपन से लेकर अब तक के जीवन के कई प्रसंगों पर मोहन व धनराम बातें करते रहे। धनराम ने मोहन की दराँती की धार तेज़ कर दी मोहन वहीं बैठा रहा, मानो उसे जाने की कोई जल्दी न हो।

सामान्य तौर से ब्राह्मण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। पिछले कुछ वर्षों से शहर में रहने के कारण मोहन गाँव की इन मान्यताओं से अपरिचित-सा हो गया था।

धनराम लोहे की एक मोटी छड़ को भट्टी में लगाकर गोलाई में मोड़ने की कोशिश कर रहा था। इतने में मोहन ने झट से उसकी मदद करके उसे गोलाकार बना दिया।

मोहन का यह हस्तक्षेप इतनी फुर्ती व आकस्मिक ढंग से था कि धनराम को टोकने का मौका ही नहीं मिला। वह मोहन को देखता रहा और उसे मोहन की कारीगरी पर इतना आश्चर्य नहीं हुआ जितना पुरोहित खानदान के एक युवक का भट्टी पर बैठकर हाथ डालने का हुआ था। वह शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखता रहा। मोहन संतुष्ट भाव से अपने लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जाँच रहा था, उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी—जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार-जीत का भाव।

6. रजनी

—मन्नू भण्डारी

पाठ परिचय

नई कहानी आंदोलन में जो नया मोड़ आया, उसमें मन्नू भंडारी का विशेष योगदान रहा। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज़ में अभिव्यक्त हुई हैं। चाहे कहानी हो या उपन्यास या फिर पटकथा-सभी में मन्नू जी ने आत्तेश, व्यंग्य एवं संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है।

प्रस्तुत पाठ 'रजनी' मन्नू भंडारी द्वारा लिखित बहुचर्चित टेलिविज़न धारावाहिक 'रजनी' की एक कड़ी है, जिसमें जुझारू एवं इंसाफ़-पसंद स्त्री-पात्र एवं सूत्रधार रजनी शिक्षा की समस्या से जूझती नज़र आती है।

पाठ का सार

'रजनी' मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित एकांकी-नाटक है। इसमें ट्यूशन के नाम पर होने वाले काले धंधे का भंडाफोड़ किया गया है। एकांकी का सार इस प्रकार है—

'रजनी' की पटकथा का प्रारम्भ एक मध्यमवर्गीय परिवार के फ्लैट के एक कमरे से होता है। घंटी बजती है। बाई दरवाज़ा खोलती है। रजनी भीतर आती है। रजनी लीला से पूछती है—बाजार नहीं चलना क्या? लीला—चलना तो था परन्तु अमित अपना रिजल्ट लेकर आता ही होगा। रजनी कहती है। ठीक है फिर तो मिठाई खाकर ही जाऊँगी लीला कहने लगी—मैंने पहले से ही रसमलाई लेकर रखी है।

इतने में अमित आता है, उसकी आँखों में आँसू हैं उसके गणित में नम्बर कम आये हैं क्योंकि उसने गणित की ट्यूशन नहीं लगाई थी। गणित वाले मास्टर ने उसके नम्बर काट लिए। लीला कहती है—तू पेपर तो बिल्कुल ठीक करके आया था, फिर इतने कम नम्बर क्यों दिए मास्टर जी ने ? रजनी रिपोर्ट कार्ड हाथ में लेकर सभी विषयों के नम्बर देखती है। केवल गणित में ही 72 अंक आये हैं शेष सभी विषयों में अच्छे हैं। रजनी अमित के आँसू पोंछती है, पिछले अंक पूछती है। मास्टर जी की ट्यूशन के बारे में पूछती है। अमित पुन: रोने लगता है। रजनी उसे डाँटते हुए कहती है—रोने वाले बच्चे रजनी आंटी को बिल्कुल पसंद नहीं। रजनी उसके मास्टर के पास जाकर बात करने की सोचती है। अमित डर जाता है कहता है, कि प्लीज़ आंटी आप स्कूल बिल्कुल मत जाइए, अगले साल सर और ज्यादा परेशान करेंगे। रजनी अगले ही दिन हैडमास्टर के पास जाकर अमित की गणित की कापी देखने का आग्रह करती है। हैडमास्टर ईयरली एग्जाम्स की कापियाँ न दिखाने का नियम बताता है। रजनी पुन: आग्रह करती है, हैडमास्टर कहता है—आप बहस करके बेकार अपना व मेरा समय बर्बाद कर रही हैं।

रजनी कहती है कि आपके विद्यालय में आपके अध्यापक बच्चों को ज़ोर-ज़बरदस्ती करके ट्यूशन पढ़ने के लिए कहते हैं। यह कौन-सा नियम है। स्कूल का हैडमास्टर कहता है—यह टीचर्स व स्टूडेंट्स का आपसी मामला है।

रजनी अपना पूरा प्रयत्न करती है कि हैडमास्टर जी कुछ समझ जायें, परन्तु सब व्यर्थ। वह घर आ जाती है।

नये दृश्य का प्रारंभ हो जाता है। रजनी का पति रजनी से पूछता है कि तुम आज बाहर गई था क्या? रजनी उसे स्कूल वाली बात बताती है। उसका पति नाराज़गी जाहिर करता है कि तूने सारी दुनिया का ठेका उठा रखा है क्या ? रजनी उसे कहती है कि गलती करने वाला तो है ही गुनाहगार पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनाहगार नहीं है।

रजनी शिक्षा निदेशक के पास जाने के लिए सोचती है कि वहाँ जाकर शायद समस्या का समाधान हो सके। वहाँ जाती है चपरासी को एक स्लिप देती है। परन्तु चपरासी उसकी स्लिप कमरे में शिक्षा निदेशक को देता ही नहीं। जितने लोग बाद में आते हैं स्लिप के नीचे पाँच रुपये देकर अन्दर चले जाते हैं, रजनी यह सब देखती है और कुछ समय बाद सीधी निदेशक के कमरे में घुस जाती है और शिक्षा निदेशक से कुछ एक प्रश्न करने के उपरान्त पूछती है—स्कूलों में आजकल प्राइवेट ट्यूशन का सिलसिला चला हुआ है। ट्यूशंस क्या बच्चों को लूटने का जो धंधा

चला हुआ है, उसके बारे में आपका बोर्ड क्या करता है? निदेशक कहते हैं कि इसमें धंधे की क्या बात है? जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है, तभी उसके माँ-बाप ट्यूशन लगवाते हैं। हैडमास्टर को एक्शन लेना चाहिए ऐसे टीचर के खिलाफ क्योंकि हमारे पास तो आपके सिवाय किसी अन्य अभिभावक की इस तरह की कोई शिकायत नहीं आई। रजनी कहती है तो फिर आपके पास शिकायत का ढेर ही लगाकर रहूँगी।

रजनी अभिभावकों को एकत्र करती है। किसी अखबार के दफ़्तर में जाती है साथ में तीन-चार महिलायें भी हैं। रजनी सम्पादक महोदय से मिलती है। सारी समस्या बताती है और उनसे साथ देने का आग्रह करती है, कहती है कि अखबार यदि किसी इश्यू को उठा ले और लगातार उस पर चोट करता रहे तो फिर वह थोड़े से लोगों की बात नहीं रह जाती, सबकी बन जाती है। सम्पादक महोदय उसकी बात मान जाते हैं। वे कहते हैं अमित के उदाहरण से आपकी सारी बात मैंने नोट कर ली है। एक अच्छा सा राइट-अप तैयार करके पी.टी.आई. के द्वारा मैं एक साथ फ्लैश करवाता हूँ। रजनी कहती है कि राइट-अप के साथ यह सूचना भी दे दीजिए कि 25 तारीख को हम लोग पेरेंट्स की मीटिंग रख रहे हैं, तो सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी।

अगले दृश्य में मीटिंग शुरू होती है। बड़ी संख्या में लोग उपस्थित होते हैं। रजनी कहती है—भाइयों और बहनों।

इतनी बड़ी संख्या में आपकी उपस्थिति और जोश बता रहा है कि अब हमारी मंज़िल दूर नहीं है। इन दो महीनों में लोगों से मिलने पर इस समस्या के कई पहलू हमारे सामने आए...कुछ अभी आप लोगों ने यहाँ सुने। यह भी सामने आया कि बहुत से बच्चों के लिए ट्यूशन जरूरी भी है...इसलिए अब हम अपनी समस्या से जुड़ी सारी बातों को नजर में रखते हुए ही बोर्ड के सामने यह प्रस्ताव रखेंगे कि कोई भी टीचर अपने ही स्कूल के छात्रों की ट्यूशन नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में बच्चों के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती करने, उनके नम्बर काटने की गंदी हरकतें अपने आप बंद हो जायेंगी। नियम तोड़ने वाले टीचर्स के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाएगी। आप सब लोग अपनी राय दीजिए।

अगले दृश्य में रजनी का पति कहता है—रजनी, ओ रजनी! सुनो तो बोर्ड ने तुम लोगों का प्रस्ताव ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। रजनी को बहुत प्रसन्नता होती है वह कहती है—मैं तो कहती हूँ कि अगर डटकर मुकाबला किया जाए तो कौन-सा ऐसा अन्याय है जिसकी धज्जियाँ न बिखेरी जा सकें। रजनी के पति कहते हैं—आई एम प्राउड ऑफ यू रजनी।

इतने में लीलाबेन, कांतिभाई और अमित रजनी के घर आते हैं, कहते हैं कि उस दिन तुम्हारी जो रसमलाई रह गई, वह आज खाओ। कांतिभाई कहते हैं कि सबके हिस्से की तुम्ही खाओ।

अमित दौड़कर अपने हाथ से रजनी को रसमलाई खिलाता है पर रजनी उसे अमित के मुँह में डाल देती है।

सब जोर से हँसते हैं। हँसी के साथ ही धीरे-धीरे दृश्य समाप्त हो जाता है।

7. जामुन का पेड़

—कृश्नचंदर

पाठ परिचय

प्रेमचंद के बाद जिन कहानीकारों ने कहानी विधा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, उनमें उर्दू कथाकार कृश्नचंदर का नाम महत्त्वपूर्ण है। कृश्नचंदर उर्दू कथा-साहित्य में अनूठी रचनाशीलता के लिए अत्यधिक चर्चित रहे हैं। वे प्रगतिशील और यथार्थवादी नज़रिए से लिखे जाने वाले साहित्य के पक्षधर थे। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कृश्नचंदर ने उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, लेख आदि बहुत कुछ लिखा, लेकिन उनकी पहचान एक कहानीकार के रूप में अधिक बनी। वे अपनी रचनाओं में काव्यात्मक रोमानियत और शैली की विविधता के कारण एक अलग मुकाम बनाते हैं।

प्रस्तुत कहानी 'जामुन का पेड़' कृश्नचंदर की एक प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कथा है, जिसमें चीज़ों को अनुपात से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर दिखलाने की पुरानी परिपाटी मौजूद है। वास्तव में, विश्वसनीयता ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी नहीं हो सकती, इनका उद्देश्य तो व्यवस्था की संवेदन शून्यता एवं अमानवीयता को उजागार करना होता है।

पाठ का सार

'जामुन का पेड़' श्री कृश्न चंदर द्वारा लिखित एक व्यंग्य-कथा है। इसमें सरकारी बाबुओं और अधिकारियों की विभागीय कार्यवाही के कारण दम तोड़ते मनुष्य की व्यथा-कथा है। कहानी का सार इस प्रकार है—

एक रात ज़ोर से आँधी आने पर सेक्रेटरियेट के लॉन में खड़ा जामुन का पेड़ गिर गया। सवेरे जब माली ने देखा तो उसे पेड़ के नीचे एक आदमी दबा हुआ दिखाई दिया।

माली चपरासी के पास, चपरासी क्लर्क के पास और क्लर्क सुपरिण्टेंडेंट के पास सूचना देने गया। सभी दौड़कर बाहरी लॉन में उस आदमी के पास आ गए। सभी क्लर्क जामुन के पेड़ के फल के बारे में बातचीत करने लगे। परन्तु उस आदमी के लिए किसी ने कुछ नहीं कहा। माली सुपरिण्टेंडेंट से कहता है—मगर यह आदमी? "चपरासी कहने लगा कि मर गया होगा, इतने भारी पेड़ के नीचे आया है।" दबे हुए आदमी ने कराहते हुए कहा—"नहीं मैं ज़िन्दा हूँ।" माली ने कहा—पेड़ हटाकर जल्दी से इसे निकाल लेना चाहिए। बहुत से माली इकट्ठे होकर भारी पेड़ के तने को हटाना चाहते हैं तो सुपरिण्टेंडेंट कहते हैं—"ठहरो! मैं अण्डर सेक्रेटरी से पूछ लूँ।"

इस प्रकार पेड़ हटाने के लिए सुपरिण्टेंडेंट अण्डर-सेक्रेटरी के पास, अण्डर सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी के पास, डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास, ज्वाइंट सेक्रेटरी चीफ सेक्रेटरी के पास, चीफ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास गया। मिनिस्टर ने चीफ सेक्रेटरी से कुछ कहा—इस प्रकार एक ने, दूसरे से कुछ कहा—फाइल चलती रही, आधा दिन बीत गया।

दोपहर को कुछ क्लर्कों ने पेड़ हटा देने का निश्चय किया, इतने में सुपरिण्टेंडेंट फाइल लिए भागा-भागा आया, कहने लगा—"हम लोग इस पेड़ को नहीं हटा सकते, हम लोग व्यापार विभाग से सम्बन्धित हैं, यह समस्या कृषि विभाग की है। फाइल को मैं कृषि विभाग भेज रहा हूँ।"

दूसरे दिन उत्तर आया कि पेड़ जहाँ गिरा है, वहाँ की ज़िम्मेदारी व्यापार विभाग की है, परन्तु व्यापार विभाग ने पुन: लिखा कि पेड़ को हटवाने की ज़िम्मेदारी कृषि विभाग की है। शाम को जवाब आया कि यह एक फलदार पेड़ है इसलिए हम यह फाइल हार्टीकल्चर डिर्पाटमेण्ट के हवाले कर रहे हैं।

रात को दबे हुए आदमी को दाल भात खिलाया गया। रात को पुलिस का पहरा लगा दिया गया। माली ने दबे हुए आदमी से पूछा तुम्हारा कोई वारिस है तो बताओ मैं उसे खबर कर देता हूँ। उसने कहा—मैं लावारिस हूँ। तीसरे दिन हार्टीकल्चर विभाग से जवाब आया कि हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाज़त नहीं दे सकता।

एक मनचले ने कहा—आदमी ही को काटकर निकाल लिया जाए। दबे आदमी ने कहा—'मगर इस तरह तो मैं मर जाऊँगा।' पर मनचले ने कहा आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी उन्नति कर चुकी है अगर इस आदमी को बीच से काटकर निकाल लिया जाए प्लास्टिक सर्जरी से धड़ के स्थान से इस आदमी को फिर से जोड़ा जा सकता है।

फाइल को मेडिकल डिर्पाटमेण्ट में भेजा गया। सर्जन आया उसने देखकर कहा—इस आदमी का प्लास्टिक ऑपरेशन तो हो सकता है और ऑपरेशन सफल भी होगा। मगर आदमी मर जाएगा अत: यह फैसला भी रद्द कर दिया गया। तब माली ने दबे हुए आदमी को कहा कि कल सेक्रेटरियेट के सारे सेक्रेटरियों की मीटिंग होगी। सब काम ठीक हो जाएगा। दबे हुए आदमी ने आह भरकर सुन्दर तरीके से शायरी की—

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जायेंगे हम तुमको खबर होने तक।"

माली ने पूछा तुम शायर हो। उसने हाँ में जवाब दिया। यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है। लोगों का झुंड का झुंड उस शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। परन्तु जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी एक कवि है तो फाइल कल्चरल डिपार्टमेण्ट में भेजी गई।

फाइल कल्चरल डिपार्टमेण्ट के अनेक विभागों से गुज़रती हुई साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँची। "सेक्रेटरी ने आकर पूछा कि तुम कवि हो और किस उपनाम से शोभित हो?"

दबे हुए व्यक्ति ने उत्तर दिया—'ओस'। सेक्रेटरी अपने विभाग में जाकर सब कुछ कह सुनकर अगले दिन भागा-भागा आया और दबे हुए व्यक्ति को बोला—"मुबारक हो, मिठाई खिलाओ, हमारी साहित्य अकादमी ने तुम्हें केन्द्रीय शाखा का मेम्बर चुन लिया लिया है। यह लो चुनाव पत्र।"

दबे व्यक्ति ने कहा—"मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से तो निकालो।" सेक्रेटरी ने कहा—"हम यह नहीं कर सकते, हम तो यहाँ तक कर सकते हैं कि अगर तुम मर जाओ तो तुम्हारी बीवी को वज़ीफा दे सकते हैं।" कवि ने रुक-रुक कर कहा—"अभी मैं जीवित हूँ, मुझे ज़िन्दा रखो।"

सेक्रेटरी बोला, "यह काम फॉरेस्ट डिपार्टमेण्ट का है।"

दूसरे दिन फॉरेस्ट डिपार्टमेण्ट के आदमी आरी कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया क्योंकि इस पेड़ को दस साल पहले पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने लगाया था अगर यह पेड़ काटा गया तो पीटोनिया सरकार से हमारे संबंध सदा के लिए बिगड़ जायेंगे। मामला प्रधानमंत्री तक पहुँचा। शाम पाँच बजे स्वयं सुपरिण्टेंडेंट कवि की फाइल लेकर उसके पास आया और चिल्लाया "सुनते हो प्रधानमंत्री ने इस पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया है और इस घटना की ज़िम्मेदारी अपने सिर ले ली है। कल यह पेड़ काट दिया जायेगा और तुम इस संकट से छुटकारा पा जाओगे।"

मगर कवि का हाथ ठंडा था, आँखों की पुतलियाँ निर्जीव और चींटियों की एक लम्बी पाँत उसके मुँह में जा रही थी।

उसके जीवन की फाइल भी पूर्ण हो चुकी थी।

8. भारत माता

—जवाहर लाल नेहरू

पाठ परिचय

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे सिपाही थे, बल्कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत निर्माण के कुशल शिल्पी भी थे। उन्होंने देश के विकास के लिए कई योजनाएँ बनाईं, जिनमें आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति तथा वैज्ञानिक अनुसंधान से लेकर साहित्य, कला, संस्कृति आदि सभी क्षेत्र शामिल थे। बच्चों के बीच 'चाचा नेहरू' के रूप में लोकप्रिय तथा शांति, अहिंसा एवं मानवता के हिमायती जवाहरलाल नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व शांति एवं पंचशील के सिद्धांतों का प्रचार किया।

प्रस्तुत पाठ समाजवाद की ओर झुकाव रखने वाले नेहरू जी की रचना 'हिंदुस्तान की कहानी' का पाँचवाँ अध्याय है, जिसमें उन्होंने 'भारत माता' शब्द पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि 'भारत माता की जय' का अर्थ है—'यहाँ के करोड़ों लोगों की जय।' अपने छोटे आकार के बावज़ूद प्रस्तुत पाठ का कथ्य अत्यंत विराट और प्रस्तुतीकरण पैना है।

पाठ का सार

'भारतमाता' पाठ 'हिन्दुस्तान की कहानी' नामक पुस्तक का पाँचवा अध्याय है। अंग्रेजी से इसे हिन्दी में 'हरिभाऊ उपाध्याय' ने रूपांतरित किया है। इस पाठ में जवाहर लाल नेहरू ने भारत की धरती, संस्कृति और यहाँ के लोगों को 'भारतमाता' की संज्ञा दी है। पाठ का सार इस प्रकार है—नेहरू जी प्राय: भ्रमण पर रहते थे, एक जलसे से दूसरे जलसे में जहाँ जनता से उनकी चर्चा का विषय भारत या हिंदुस्तान ही रहता था। उन्हें महसूस हुआ कि शहर में रहने वाले लोग अधिक सयाने थे, वे भारत या हिंदुस्तान के बारे में सुनना पसन्द नहीं करते थे। उनको किसी दूसरी तरह की खुराक की आवश्यकता थी। भारत के बारे में केवल किसान ही सुनना पसन्द करते थे। नेहरू जी पूरे भारत के किसानों को यही बताते थे कि पूरा देश जिसकी आज़ादी के लिए हम प्रयत्न कर रहे हैं एक है, इसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से से अलग होते हुए भी हिंदुस्तान एक ही है।

नेहरू जी को भारत के उत्तर-पश्चिमी, पूर्व-दक्षिण में सभी किसानों की एक जैसी ही तकलीफ़े महसूस होती थीं, जैसे—गरीबी, कर्ज़दारी, पूँजीपतियों के शिकंजे, ज़मींदारों व महाजनों के कड़े लगान व सूद, पुलिस के जुल्म। ये सभी बातें विदेशी सरकार द्वारा हम पर लादी गई थीं। इनसे सभी छुटकारा पाना चाहते थे। नेहरू जी चाहते थे कि सभी लोग हिंदुस्तान की ऐसी हालत के लिए सोचें। नेहरू जी जलसे में चीन, स्पेन, अबीसिनिया, मध्य यूरोप, मिस्र और पश्चिमी एशिया में होने वाले कशमकशों का ज़िक्र भी करते थे, उन्हें, अमेरिका की प्रगति के बारे में भी बताते। पुराने महाकाव्यों व पुराणों की कथा-कहानियों में इस देश की पूरी व्यथा लिखी हुई थी, कुछ ऐसे लोग भी मिल जाते थे जिन्होंने सभी तीर्थों की यात्रा कर रखी थी वे हिंदुस्तान का पूरा वृतांत बता देते थे।

सन् 1930 के बाद हमारे देश में अर्थिक तंगी पैदा हो गई थी, नेहरू जी जब उन्हें जलसों में दूसरे देशों के अन्याय के बारे में बताते थे तो वे समझ जाते थे कि हमारे साथ विदेशियों ने कितने जुल्म किए हैं।

कभी-कभी नेहरू जी का स्वागत—'जय माता दी' के नारे से करते थे। नेहरू जी पूछते थे—'भारतमाता कौन है?' परन्तु इस प्रश्न को सुनकर वहाँ वे हैरान हो जाते थे। आश्चर्य से नेहरू जी को देखने लगते थे। एक मोटे ताजे किसान ने हिम्मत जुटाकर उत्तर दिया कि 'भारत माता से उनका मतलब धरती माता है।' कभी-कभी लोग कहते आप ही उत्तर बताइए। नेहरू जी कहते—हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है। लेकिन वह इससे बहुत ज़्यादा है, हिंदुस्तान के नदी, पहाड़, जंगल, खेत, हिंदुस्तान के सभी लोग जो देश में फैले हुए हैं—भारत माता दरअसल यही सब लोग हैं। 'भारत माता की जय' से मतलब हुआ इन लोगों की जय। नेहरू जी सभी को समझाते कि तुम इस भारत माता का अंश हो। एक तरह से तुम ही भारत माता हो। वे ये सब सुनकर प्रसन्न हो जाते। उन्हें यूँ लगता मानो उन्होंने बहुत बड़ी खोज कर ली हो।

पूरक पाठ्यपुस्तक-वितान

अध्याय — 6 पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर

—कुमार गंधर्व

पाठ परिचय

पद्मविभूषण, कालिदास सम्मान आदि जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित कुमार गंधर्व किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। दस वर्ष की उम्र से गायिकी की मंचीय प्रस्तुति करने वाले कुमार गंधर्व के संगीत की मुख्य विशेषता मालवा लोक धुनों और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुन्दर सामंजस्य है, जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है। लोक में रचे-बसे लुप्तप्राय पदों का संग्रह कर और उन्हें स्वरों में बाँधकर कुमार गंधर्व ने इन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी।

प्रोफेसर देवधर और अंजनीबाई मालपेकर से संगीत की शिक्षा लेने वाले कुमार गंधर्व एकमात्र ऐसे संगीतज्ञ हुए हैं, जिन्होंने मालवांचल की बोली (मालवी) और उसके लोकगीतों को बंदिशों का स्वरूप दिया। लोक संगीत को शास्त्रीय संगीत से भी उच्च स्तर पर ले जाने वाले कुमार गंधर्व कालिदास के बाद मालवा की सबसे दिव्य सांस्कृतिक विभूति हैं।

संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर एक ऐसा नाम है, एक ऐसा सुर है, जिसने एक महान् शास्त्रीय गायक को कलम उठाने पर विवश कर दिया। मूल हिन्दी में लिखी गई यह रचना भाषा की सांगीतिक धरोहर है। यह शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत को एक धरालत पर ला रखने का साहस है। यह एक ऐसी परख है, जो न शास्त्रीय है और न सुगम। बस एक संगीत है, गानपन की पहचान है।

पाठ का सार

लेखक ने स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर की गायकी पर बेबाक टिप्पणी की है। लता मंगेशकर के 'गानपन' के बहाने लेखक ने शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत यानि-फिल्मी संगीत के संबंधों पर भी अपना मत प्रकट किया है। संगीत ज़िंदगी को लय देता है, ताज़गी देता है। हर मोड़ पर आने वाले उतार-चढ़ाव से ज़ूझने की ताकत देता है और मन को उन्मुक्त करता है।

लता : एक विलक्षण गायिका

लेखक बताता है कि बरसों पहले वह बीमार था तब एक दिन उसे रेडियो पर एक अद्वितीय स्वर सुनाई दिया। यह स्वर उसके अंतर्मन को छू गया। गाना समाप्त होने पर गायिका का नाम घोषित किया गया-लता मंगेशकर! नाम सुनकर वह हैरान रह गया। उसे लगा कि प्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अज़ब गायकी ही उनकी बेटी की आवाज़ में प्रकट हुई है। यह शायद बरसात फ़िल्म से पहले का गाना था। लता से पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना दबदबा था, परंतु लता उससे आगे निकल गई।

लेखक का मानना है कि लता के बराबर की गायिका कोई नहीं हुई। लता ने चित्रपट संगीत को अत्यधिक लोकप्रिय बनाया। आज बच्चों के गाने का स्वर बदल गया है। यह सब लता के कारण संभव हुआ है। चित्रपट संगीत के विविध प्रकारों को आम आदमी समझने लगा है तथा गुनगुनाने लगा है। लता ने नई पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है तथा आम आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में योगदान दिया है।

लता के स्वर में गानपन

शास्त्रीय गान और लता के गान में से लोग लता के गान को ही अधिक पसंद करते हैं। इसका कारण है—लता का गानपन, उनका सुरीलापन, मस्त करने वाला स्वर। श्रोता को रागों से नहीं, सुमधुर गानपन से मतलब होता है। गानपन लता के स्वर में शत-प्रतिशत है। यही लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म भी है।

नूरजहाँ की गायकी में जहाँ एक मादक उत्तान होती थी, वहीं लता के स्वर में एक निर्मलता है। उनमें कोमलता और मुग्धता का संगम है, मानो उनका निजी जीवन उनके स्वर में झलक उठा है। यह अलग बात है कि संगीत-दिग्दर्शकों ने उनकी इस कला का भरपूर उपयोग नहीं किया। लता के गाने में एक प्रकार का नादमय उच्चार है। उनके गीत के दो शब्दों का अंतर स्वरों की आस से भर जाता है। ऐसा लगता है मानो दोनों शब्द एक-दूसरे में विलीन हो गए हैं। लता की यह विशेषता अनुपम है। लोग कहते हैं कि लता ने करुण रस के गाने बहुत अच्छे गाए हैं। लेखक का मत इसके विपरीत है। उसके अनुसार, लता ने मुग्ध शृंखला के गाने मध्य और द्रुत लय में बहुत अच्छे गाए हैं। लेखक का मानना है कि संगीत-दिग्दर्शकों ने उनसे ऊँची पट्टी में गवाकर उनके साथ अन्याय किया है।

शास्त्रीय संगीत और चित्रपट (फिल्मी) संगीत

लेखक का मानना है कि शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में तुलना निरर्थक है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत में तेज लय व चपलता प्रमुख होती है। चित्रपट संगीत व ताल प्राथमिक अवस्था का होता है और शास्त्रीय संगीत में इसका परिष्कृत रूप होता है। चित्रपट संगीत में आधे तालों, आसान लय, सुलभता व लोच की प्रमुखता आदि विशेषताएँ होती हैं। चित्रपट संगीत गायकों को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी अवश्य होनी चाहिए। लता के पास यह ज्ञान भरपूर है। लता के तीन-साढ़े तीन मिनट के गान और तीन-साढ़े तीन घंटे की शास्त्रीय महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक जैसा हैं। उनके गानों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होता है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर आधारित होती है और रंजकता का संबंध रसिक को आनंदित करने की सामर्थ्य से है। लता का स्थान अव्वल दरज़े के खानदानी गायक के समान है। किसी ने पूछा कि क्या लता शास्त्रीय गायकों की तीन घंटे की महफिल जमा सकती हैं? लेखक उसी से प्रश्न करता है कि क्या कोई प्रथम श्रेणी का शास्त्रीय गायक तीन मिनट में चित्रपट का गाना इतनी कुशलता और रसोत्कटता से गा सकेगा? शायद नहीं। खानदानी गवैयों ने चित्रपट संगीत पर लोगों के कान बिगाड़ देने का आरोप लगाया है। लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं।

चित्रपट संगीत का महत्त्व

लेखक का मत है कि शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट प्राणी हैं। उन्होंने शास्त्र-शुद्धता को कर्मकांड की तरह तूल दे रखा है, जबकि चित्रपट संगीत ने अभिजात्य संगीत को लोगों तक पहुँचाया है। आज लोगों को शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना नहीं, बल्कि सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए। चित्रपट संगीत की लचकदारी उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। चित्रपट संगीत की मान्यताएँ, झंझटें और चुनौतियाँ अलग तरह की हैं। यहाँ नव-निर्माण की संभावनाएँ भी बहुत हैं। बड़े-बड़े संगीतकार शास्त्रीय रागदारी का, लोकगीतों की धुनों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। वे धूप की तरह कौतुक करने वाले पंजाबी लोकगीतों का, बादल की तरह घुमड़ते राजस्थानी लोकगीतों का, घाटियों में गूँजते पहाड़ी लोकगीतों का, ऋतु चक्रों का, खेती से संबंधित कृषि गीतों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। वास्तव में, चित्रपट संगीत का दायरा बहुत बड़ा है। उसमें अनेक अलक्षित प्रयोग करने की गुंजाइश बनी हुई है।

2. राजस्थान की रजत बूँदें

—अनुपम मिश्र

पाठ परिचय

पर्यावरण संबंधी अनेक आंदोलन से जुड़े अनुपम मिश्र हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि भवानी प्रसाद मिश्र के पुत्र हैं। इनकी रचनाओं में ग्रामीण संस्कृति के प्रति प्रेम स्पष्ट रूप से झलकता है। मुख्यत: पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर कार्य करने के कारण उनकी रचनाओं में पर्यावरण संबंधी विषय एवं ज्वलंत समस्याओं के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण उपस्थित रहता है। पानी, वर्षा, अकाल जैसी समस्याओं पर उन्होंने विशेष रूप से ध्यान दिया और इससे संबंधित काफी कुछ लिखा भी। उनकी रचनाएँ लोक परंपराओं एवं ग्रामीण संस्कृति के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता की प्रतीक हैं। वस्तुत: पर्यावरण उन्मुक्त मन को खुला आकाश देता है—साँस भरने को, जिजीविषा को मकसद देता है।

अनुपम मिश्र की भाषा सरल, एवं सामान्य बोलचाल की भाषा है, जिसमें आँचलक शब्दों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है। ग्रामीण शब्दावली तथा लोक जीवन से जुड़े मुहावरों के साथ विषय की गंभीरता तथा शैली के प्रवाह का जीवंत रूप उनके गद्य को एक नई आभा से मंडित कर देता है।

पाठ का सार

यह रचना एक राज्य-विशेष राजस्थान की जल समस्या का समाधान मात्र ही प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि यह जमीन की अतल गहराइयों में जीवन की पहचान भी कराती है। यह रचना धीरे-धीरे भाषा की ऐसी दुनिया में ले जाती है, जो कविता नहीं है, कहानी नहीं है, लेकिन पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

रेत में पानी की तलाश और कुंई निर्माण की प्रक्रिया

लेखक राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्रोत कुंई का वर्णन करता है। वह बताता है कि कुंई खोदने के लिए चेलवांजी बसौली से खुदाई कर रहा है। अंदर भयंकर गर्मी है और गर्मी कम करने के लिए बाहर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठीभर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकते हैं। इससे ताजी हवा अंदर आती है और गहराई में जमी दमघोंटू गर्म हवा बाहर निकलती है। चेलवांजी सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का बर्तन टोप की तरह पहनते हैं, ताकि चोट न लगे। थोड़ी खुदाई होने पर इकट्ठा हुआ मलवा बाल्टी के जरिए बाहर निकाला जाता है।

चेलवांजी कुँए की खुदाई व चिनाई करने वाले प्रशिक्षित लोग होते हैं। कुंई, कुएँ से छोटी होती है, परंतु गहराई कम नहीं होती। कुंई में न सतह पर बहने वाला पानी आता है और न भू-जल। मरुभूमि में रेत अत्यधिक है। यहाँ वर्षा का जल शीघ्र ही भूमि में समा जाता है।

कुंई के लिए उपयुक्त स्थल की तलाश

चूँकि कुँओं का पानी खारा होता है इसलिए पीने के काम नहीं आता। लेकिन रेतीली भूमि में दस-पन्द्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की मोटी परत पाई जाती है जो वर्षा जल को नीचे जाने से रोकती है।

इस पट्टी का पता तब चलता है जब बरसात का पानी एकदम रेत में नहीं समाता। यह पट्टी बारिश के पानी को गहरे खारे जल में मिलने से रोकती है। रेत में जमा इसी वर्षा जल को छोटी-छोटी कुंइयों के द्वारा काम में लिया जाता है।

राजस्थान में पानी के प्रकार

राजस्थान में पानी तीन रूपों में मिलता है। पहला रूप पालर अर्थात् बरसात के बाद नदी, तालाब में रोका गया पानी। पानी का दूसरा रूप पाताल पानी अर्थात् जमीन में काफी नीचे पाया जाने वाला खारा पानी और इसका तीसरा रूप रेजाणी पानी अर्थात् पालर पानी व पाताल पानी के बीच मिलने वाला पानी। यहाँ वर्षा को मापने के लिए 'रेजा' शब्द का उपयोग होता है खड़िया पट्टी के कारण ही रेजाणी पानी, खारे पानी से मिलकर खारा होने से बचा रहता है। जिसे कुंई बनाकर प्रयोग में लेते हैं। कुँई में रेत के कणों के बीच जमा पानी बूँद-बूँद कर एकत्र होता है। कुँई का मुँह छोटा रखा जाता है। यदि कुंई गहरी होती है तो पानी के लिए घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है जिसे गरेडी, चरखी या फरेडी भी कहते है। इन कुंइयों पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण रहता है। यह खड़िया पट्टी पूरे राजस्थान में न होकर चुरु बीकानेर, जैसेलमेर और बाड़मेर आदि क्षेत्रों में ही पायी जाती है। वहाँ पीने के पानी का यही प्रचलित स्त्रोत है।

3. आलो-आँधारि

—बेबी हालदार

पाठ परिचय

एक घरेलू नौकरानी के रूप में कार्यरत बेबी हालदार ने अपनी आत्मकथा 'आलो-आँधारि के' माध्यम से लेखन के क्षेत्र में एक ऐसी यात्रा प्रारम्भ की, जो न तो पहाड़ों की है, न समद्र तट की और न स्टडीरूम की, बल्कि यथार्थ की आँच से तपती उस रेगिस्तानी जीवन की है, जिसने हर दिन, हर क्षण उसे एक नई सीख दी, एक नया अनुभव-संसार दिया।

'आलो-आँधारि' नामक आत्मकथांश की प्रस्तुति के माध्यम से नायिका और लेखिका बेबी हालदार ने अपने लेखन के माध्यम से साहित्य के उन पहरुओं को चुनौती दी है, जो सत्य को एक सुनिश्चित साँचे में देखने के आदी हैं, जो समाज के उपेक्षित कोने में पनपते साहित्य को हाशिये पर रखते हैं और भाषा एवं साहित्य को भी एक खास वर्ग की जागीर मानते हैं।

पाठ का सार

यह आत्मकथा उस नायिका या लेखिका की है, जो तेरह वर्ष की आयु में विवाहित होकर जीवन की सबसे संवेदनशील उम्र में ही अपने पति के तीन बच्चों की माँ बन जाती है। पति की ज्यादतियों से तंग आकर अपने बच्चों के साथ अंतत: अकेली अपने जीवन के कटु यथार्थ का सामना करती है।

लेखिका की पारिवारिक चिंताएँ

लेखिका अपने पति से अलग किराए के मकान में अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी से अपने लिए काम ढूँढ़ने के लिए कहती थी। शाम को जब वह घर वापिस आती, तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वे उसे सांत्वना देती थीं।

लेखिका की पहचान सुनील नामक एक युवक से थी। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिखा और घर की सफ़ाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका को भला-बुरा कहा। लेखिका उस घर में रोज सवेरे आती तथा दोपहर तक सारा काम खत्म करके चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी।

जिस मकान में वह रहती थी, उसका किराया अधिक था। उसने कम सुविधाओं वाला नया मकान ले लिया। यहाँ के लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर का खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी।

मकान मालिक की आत्मीयता

उसके मकान मालिक सज्जन थे। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती है? लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को 'तातुश' कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उसका सारा परिवार लेखिका का ख्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफ़ाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उसे एक किताब पढ़ने के लिए दी। तातुश ने उससे लेखकों के बारे में पूछा, तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए।

एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ ज़रूर लिखे। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज कुछ पृष्ठ लिखने लगी। यह शौक आदत में बदल गया।

लेखिका का बेघर होना

उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उसके साथ छेड़खानी करते थे और अनावश्यक रूप में परेशान करते थे। घर में बाथरूम न होने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी।

एक दिन लेखिका काम से घर लौटी तो देखा कि मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूँढ़ने की भी दिक्कत थी। दूसरे घरों के लोग अपना सामान इकट्ठा करके नए घर की तलाश में चले गए। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। उसे दु:ख था कि दो भाई नज़दीक में रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं कर रहे थे।

तातुश का सहारा एवं प्रोत्साहन

तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला, तो उन्होंने अपने घर में उसे कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश बहुत ख्याल रखते। बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करते। उनके सद्व्यवहार को देखकर बेबी हैरान थी। उसका बड़ा लड़का किसी अन्य जगह काम करता था। वह उदास रहती थी। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। उस लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे।

लेखिका द्वारा लेखन कार्य प्रारम्भ

लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के जोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा और उसने उन्हें जेठू कहकर संबोधित किया। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहुँचे। उसने उसकी माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखन को पसंद करते हैं। शर्मिला उससे तरह-तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि अगर तातुश उससे न मिलते, तो यह जीवन कहाँ मिलता।

'आलो-आँधारि' का अस्तित्व में आना

लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया था। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती थी कि अपनों से बिछुड़कर कैसे जी पाएगी। परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया, जब लेखिका की लेखन कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का शीर्षक था—'आलो-आँधारि' बेबी हालदार लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

4. भारतीय कलाएँ

पाठ परिचय

भारत की विविधता ही भारत की पहचान है। हमारी कलाओं को त्योहारों, रीति-रिवाजों, उत्सवों से अलग नहीं किया जा सकता। यह कलाएँ जन्मोत्सव से लेकर शादी-ब्याह तक परम्परा के रूप में चलती रहती हैं। मनुष्य के जीवन से जुड़ी होने के कारण भारत की ये विशिष्ट कलाएँ विरासत के प्रति हममें उत्साह और विश्वास भर देती हैं।

पाठ का सार

कलाओं की अपनी भाषा होती है जैसे—हम अपने आस-पास के परिवेश, प्रकृति या भावों और विचारों को भाषा में व्यक्त करते हैं, वैसे ही चित्रकारी, संगीत या नृत्य के माध्यम से भी हम अपने आस-पास और प्रकृति को अभिव्यक्त करते हैं। हम जो कुछ देखते-सुनते हैं, उसे किसी-न-किसी रूप में और नए-नए तरीके से कहना या अभिव्यक्त करना चाहते हैं। समुद्र में उठती-गिरती लहरों को देखकर चित्रकार उसे रंगों से सजाता है। चिड़ियों की चहचहाहट को गायक स्वरों में सजाता है तो नर्तक मन के भावों को विभिन्न मुद्राओं में सजाता है। कभी चित्रों में, तो कभी गीतों में, कभी नृत्य में तो कभी संगीत में यह कहने-सुनने की परम्परा सदियों से चल रही है और आज भी नए-नए तरीकों में लगातार जारी है।

हमारा देश भारत उत्सवधर्मी है। विविधता हमारी पहचान है। विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न त्योहारों के साथ-साथ विविध कलाएँ भी हमारी अनूठी पहचान हैं। ये कलाएँ जन्मोत्सव से लेकर शादी-ब्याह, पूजा तथा खेती-बाड़ी से भी जुड़ी हैं। अगर हम आज पीछे मुड़कर देखें तो पाएँगे कि जनजातीय और लोककला शैलियों के सभी रूपों में एक व्यवस्था भी दिखाई पड़ती है जो आगे चलकर शास्त्रीय कलाओं का आधार बनी। मंदिरों और महलों में विकसित होती हुई ये कलाएँ शास्त्रीय स्वरूप ग्रहण करती है। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में इनका शास्त्रीय स्वरूप बना जो कला के लिए अब तक का प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण शास्त्र है।

चित्रकला

चित्रकारी प्राचीन काल से ही हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। सबसे प्राचीन चित्रों के नमूने शैल चित्रों को ही माना जाता है। ये चट्टानों पर प्राकृतिक रंगों से बने हुए चित्र हैं। ये गुफ़ाओं में मिलते हैं। अंजता की गुफ़ाओं के चित्र इतने आकर्षक हैं कि वे आज तक के कलाकारों पर गहरा असर डालते हैं।

संगीत कला

भारत के प्राचीनतम संगीत का वर्णन वैदिक काल में मिलता है। सामवेद में गाने के जो निर्देश दिए गए हैं उससे यह पता चलता है कि वैदिक महर्षियों के पूजा और मंत्रोच्चार के तरीके को ही साम कहते थे। वीणा, जलतरंग, दोतार या वांसुरी में प्रयोग किये जाने वाली चीज़ें हमारे आस-पास के रोज़मर्रा में प्रयोग होने वाली हैं। हमारे यहाँ का मुख्य वाद्य वीणा ही थी।

खण्ड 'ब' वर्णनात्मक लेखन

*सृजनात्मक लेखन और व्यावहारिक लेखन

अध्याय — 7 अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन

स्मरणीय बिंदु

किसी स्थिति या घटना पर लिखना रचनात्मक लेखन के अंतर्गत आता है। रचनात्मक लेखन के लिए भाषा और संबंधित विषय पर पकड़ अथवा जानकारी होनी आवश्यक है। दी गई स्थिति अथवा घटना पर लिखने के लिए विषय, संदर्भ, दिशा की परिधि (सीमा) निर्धारित करना आवश्यक है, यह रचनात्मक लेखन, लेखन कौशल का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसके कौशल के अभाव में दी गई स्थिति अथवा घटना पर एकाग्रचित्त होकर नहीं लिखा जा सकता। रचनात्मक लेखन के लिए समसामयिक विषयों के अतिरिक्त प्रचलित रिवाज़ों, सामाजिक परिस्थितियों, सरकारी, गैर-सरकारी प्रमुख नीतियों आदि की भी जानकारी होनी चाहिए।

रचनात्मक लेखन के अंतर्गत एक ही विषय पर बहुत से लोगों के विचार बहुत प्रकार के हो सकते हैं। किसी भी विषय पर यदि किसी एक प्रश्न के अनेक उत्तर प्राप्त होते हैं तो यह सफल रचनात्मक लेखन का उदाहरण है।

अध्याय — 8 औपचारिक पत्र लेखन

स्मरणीय बिंदु

पत्रों का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। पत्रों के माध्यम से हम अपने मनोभावों, विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं। सगे-सम्बन्धियों से सम्पर्क बनाये रखते हैं। अनेक घरेलू बातों से लेकर देशकाल की बातों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। वर्तमान युग में पत्रों का प्रयोग व्यापारिक सम्बन्धों में भी होने लगा है अत: पत्र लिखते समय हमें अत्यन्त सावधान रहना चाहिए।

पत्र लेखन में निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए—

(1) पत्र अपनी आयु, योग्यता, पद, सम्बन्ध और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर लिखना चाहिए।

(2) पत्र की भाषा, सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

(3) उद्देश्य और आशय की अभिव्यक्ति के साथ-साथ प्रारम्भ से अन्त तक विनम्रता, स्नेह और शिष्टाचार का पत्र निर्वाह में करना चाहिए।

(4) अशिष्ट भाषा का प्रयोग पत्र में कदापि नहीं करना चाहिए।

(5) पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।

(6) पत्र में किसी प्रकार का आडम्बर नहीं होना चाहिए।

(7) पत्र में पता, तिथि, संबोधन, अभिवादन, समाप्ति आदि सुस्पष्ट ढंग से होने चाहिए।

पत्र के भाग— पत्र के पाँच भाग होते हैं—

(1) पत्र में सबसे ऊपर बायें हाथ की ओर भेजने वाले को अपना पता और दिनांक लिखना चाहिए।

(2) मूल विषय से पूर्व पत्र पाने वाले के साथ अपने संबंध के अनुसार बायीं ओर उचित सम्बोधन लिखना चाहिए। व्यापारियों और कार्यालय से सम्बन्धित पत्रों में सम्बद्ध व्यक्ति का पद सहित पूरा पता अथवा कार्यालय का पता लिखना चाहिए, उसे आदरपूर्वक सम्बोधित करना चाहिए।

(3) पत्र को आरम्भ करने के बाद मुख्य विषय पर आना चाहिए। सभी बातें क्रमपूर्वक लिखनी चाहिए।

(4) मुख्य विषय समाप्त होने के पश्चात् अन्त में पत्र के बायीं ओर सम्बोधन के अनुसार भवदीय, आपका आदि शब्द लिखकर, भेजने वाले का पूरा नाम लिखना चाहिए।

(5) लिफाफे या पोस्टकार्ड पर पाने वाले का पूरा पता, पिनकोड नम्बर सहित लिखना चाहिए।

पत्रों के प्रकार—पत्र मुख्यत: दो प्रकार के हो सकते हैं; जैसे—अनौपचारिक, औपचारिक।

अनौपचारिक पत्रों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक आदि पत्र आते हैं तथा औपचारिक पत्रों में व्यावसायिक पत्र तथा कार्यालयी पत्र आते हैं। इस प्रकार पत्रों को चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) व्यक्तिगत पत्र—ऐसे पत्र जो माता-पिता, भाई-बहन अथवा किसी अन्य प्रियजन या मित्र को लिखे जाते हैं, व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं।

(2) सामाजिक पत्र—सामाजिक स्तर पर विवाह, मृत्यु, जन्म-दिवस, गृह प्रवेश आदि अवसरों पर लोगों को आमंत्रित करने के लिए जो पत्र लिखे अथवा छपवाए जाते हैं, वे सामाजिक पत्र कहलाते हैं।

(3) व्यावसायिक पत्र—किसी व्यवसायी द्वारा अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में दूसरे व्यापारियों, दुकानदारों, ग्राहकों, कारखानेदारों अथवा फर्मों को जो पत्र लिखे जाते हैं, वे व्यावसायिक अथवा व्यापारिक पत्र कहलाते हैं।

(4) कार्यालयी पत्र—जो पत्र सरकारी अथवा गैर-सरकारी कार्यालयों द्वारा अन्य कार्यालयों, विभागों, व्यक्तियों को लिखे जाते हैं, वे कार्यालयी पत्र कहलाते हैं।

अध्याय — 9 डायरी एवं कथा/पटकथा लेखन

1. डायरी लेखन

स्मरणीय बिन्दु

डायरी लेखन व्यक्ति के द्वारा लिखा गया व्यक्तिगत अनुभवों, सोच और भावनाओं को लिखित रूप में अंकित करके बनाया गया एक संग्रह है। विश्व में हुए महान् व्यक्ति डायरी लेखन करते थे और उनके अनुभवों से उनके निधन के बाद भी अनेक लोगों को प्रेरणा प्राप्त होती है। डायरी **गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा** है। इसमें लेखक आत्मसाक्षात्कार करता है।

डायरी के प्रकार—डायरी चार प्रकार की होती है। (i) व्यक्तिगत डायरी (ii) वास्तविक डायरी (iii) काल्पनिक डायरी (iv) साहित्यिक डायरी।

डायरी विद्या की प्रमुख कृतियाँ—

लेखक		डायरी
घनश्याम दास विड़ला	—	डायरी के पन्ने, 1940 ई.
सुन्दरलाल त्रिपाठी	—	दैनन्दिनी, 1945 ई.
श्रीराम शर्मा	—	सेवाग्राम की डायरी, 1946 ई.
सियारामशरण गुप्त	—	दैनिकी, 1947 ई.
उपेन्द्रनाथ अश्क	—	ज़्यादा अपनी कम पराई, 1959 ई.
अज्ञेय	—	बर्लिन की डायरी (एक बूँद सहसा उछली में संकलित, 1960 ई.
राजेन्द्र अवस्थी	—	सैलानी की डायरी, 1976 ई.
जयप्रकाश नारायण	—	मेरी जेल डायरी, 1977 ई.
मोहन राकेश	—	मोहन राकेश की डायरी, 1985 ई.
फणीश्वरनाथ रेणु	—	बनतुलसी की गन्ध, 1984 ई.
रामकान्त शर्मा	—	साहित्यकार की स्विस डायरी, 2016 ई.
गरिमा श्रीवास्तव	—	देह ही मेरा देश, 2018 ई.
पुष्पिता अवस्थी	—	नीदरलैण्ड डायरी, 2018 ई.

डायरी लिखने का उद्देश्य

(1) व्यक्ति जो बात दूसरों को समझा पाने अथवा व्यक्त कर पाने में असमर्थ होता है, उसे वह अपनी डायरी में लिख लेता है। डायरी सही अर्थ में एक सच्चे मित्र की तरह होती है जिसे हम सब कुछ बता सकते हैं। इसमें प्रतिदिन की विशेष घटनाओं को लिखकर हम उन्हें यादगार बना लेते हैं।

(2) जिस प्रकार हम फोटो देखकर उस अवसर की याद ताजा कर लेते हैं उसी प्रकार डायरी के माध्यम से हम अतीत में लौट सकते हैं, तथा अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

(3) प्रसिद्ध व महान् व्यक्ति भी डायरी लिखते थे। उनकी डायरी पढ़कर हम पूरा युग देख सकते हैं। कई बार यही डायरी आगे चलकर 'आत्मकथा' का रूप ले लेती है जिससे हम महान् व्यक्तियों के विचारों, अनुभवों व दिनचर्या के बारे में जान पाते हैं।

मानव में समस्त भावों, मानसिक उद्वेगों, अनुभूति विचारों को अभिव्यक्त करने में साहित्य का सर्वोच्च स्थान है। समीक्षकों ने डायरी को साहित्य की कोटि में इसलिए रखा है क्योंकि वह किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व का उद्घाटन करती है या मानव समाज के विभिन्न पक्षों का सूक्ष्म और जीवन्त चित्र उपस्थित करती है। डायरी लेखक अपनी रुचि और आवश्यकतानुसार राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक, साहित्यिक विभिन्न पक्षो के साथ निजी अनुभूतियों का चित्रण कर सकता है।

डायरी का प्रारूप

(1) पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि, दिन तथा लिखने का समय अवश्य लिखें।

(2) इसे प्राय: सोने जाने से पहले लिखें, ताकि पूरे दिन में घटित सभी विशेष घटनाओं को लिख सकें।

(3) डायरी के अन्त में अपने हस्ताक्षर करें, ताकि वह आपके व्यक्तिगत दस्तावेज बन सकें।

(4) डायरी लिखते समय सरल व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें।

डायरी लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

डायरी में प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं में से कुछ प्रमुख या विशेष रूप से **प्रभावित करने वाली घटना** को ही लिखा जाता है। आप डायरी में अपनी **दिनचर्या** को भी लिख सकते हैं। डायरी **आत्माभिव्यक्ति का उत्तम साधन** है। जो बात हम किसी से नहीं कर सकते, उसे डायरी में लिखकर **अपने मन का बोझ हल्का** कर सकते हैं।

डायरी लिखने के लाभ

- डायरी लिखने से आप घटनाओं को ज़्यादा समय तक याद रख पाते हैं।
- डायरी लेखन हमारे लिखने की कला का विकास करती है। डायरी लिखने से हम न सिर्फ लिखने की कला में सुधार कर सकते हैं बल्कि बेहतर शब्दों में भी समझ सकते हैं।

- डायरी लिखना हमें रचनात्मक बनाता है।
- आपके लिखने के तरीके में सुधार होता है। Hand writing में सुधार आपके व्यक्तित्व की साफ़ झलक देता है।
- डायरी लिखने से व्यक्तित्व का विकास होता है।
- संकल्प शक्ति और भावना शक्ति के साथ मनोबल में भी मज़बूती आती है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

डायरी लिखते समय सावधानियाँ

(i) डायरी सदा किसी नोटबुक अथवा पिछले साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए। इसका कारण यह है कि यदि हम वर्तमान वर्ष की डायरी तिथि अनुसार लिखेंगे तो उसमें एक दिन के लिए दी गई जगह कम या अधिक हो सकती है। इससे हमें भावों की अभिव्यक्ति को उसी सीमा में ही बाँधना पड़ेगा।

(ii) डायरी लिखते समय स्वयं तय करें कि आप क्या सोचते हैं और स्वयं को क्या करना चाहते हैं। दिनभर की घटनाओं में से मुख्य घटना अथवा गतिविधि का चयन करने के बाद ही उसे शब्दबद्ध करें।

(iii) डायरी अत्यन्त निजी वस्तु है। इसे सदा यही मानकर लिखें कि उसके पाठक भी आप स्वयं हैं और लेखक भी। इससे भाषा शैली स्वाभाविक बनी रहती है।

(iv) डायरी में भाषा की शुद्धता और शैली की विशेषता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। मन के भावों को स्वाभाविक ढंग से जिस रूप में भी प्रस्तुत किया जाए, वही डायरी की शैली होती है।

(v) डायरी समकालीन इतिहास होती है अत: डायरी लिखते समय हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। डायरी में डायरी लेखक के भावों और तत्कालीन समाज को स्पष्ट देखा जा सकता है।

डायरी लेखन की भाषा-शैली

डायरी लिखते समय हमें सहज, व्यावहारिक तथा आडम्बरविहीन भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए। मानव एवं साहित्यिक भाषा-शैली के प्रयोग के मोह में हम डायरी में अपनी भावनाओं को सहज़ रूप में व्यक्त नहीं कर सकते। इसमें भावों को सर्वत्र सहज़ता से प्रकट होने का अवसर मिलना चाहिए। मन में उत्पन्न भाव अत्यन्त सरलता से शब्दों में ढलते जाने चाहिए। डायरी लेखन में आप अपनी बात जैसे चाहें और जिस ढंग से चाहें लिख सकते हैं। यही डायरी की भाषा-शैली की विशेषता है। डायरी की भाषा-शैली समस्त बन्धनों से मुक्त होती है।

2. कथा-पटकथा लेखन

स्मरणीय बिन्दु

कथा क्या है? 'कथा' से आशय 'वह जो कही जाए' अर्थात् 'बात'। न्याय में यथार्थ निश्चय या विपक्षी की पराजय के लिए जो बात कही जाए, उसे कथा कहते हैं। कथा के तीन भेद होते हैं—बाद, जल्प, वितण्डा।

कहानी में कथा की भूमिका—कहानियाँ लोगों को जीवन का अर्थ समझने में मदद करती हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही ऐसी कई पारम्परिक कहानियाँ हैं जो उनसे जुड़े समाजों और समुदायों के कुछ नियमों और मूल्यों को समझाने में मदद करती हैं। अनेक भाषाओं और संस्कृतियों की मौज़ूदगी के कारण भारत ओज़स्वी लोककथाओं में विशेष रूप से समृद्ध है।

पटकथा—पटकथा किसी फ़िल्म या दूरदर्शन कार्यक्रम के लिए लेखक द्वारा लिखा गया कच्चा चिट्ठा होता है। यह मूल रूप से भी लिखा जा सकता है और किसी उपन्यास या कहानी के लिए भी तैयार किया जा सकता है। इसमें संवाद और संवादों के बीच होने वाली घटनाओं व दृश्यों का विस्तृत विवरण होता है। इसे अंग्रेजी में 'स्क्रीनप्ले' भी कहा जाता है।

स्क्रीनप्ले क्या होता है? स्क्रीनप्ले के फ़ॉरमेट से परिचित होने के बाद उपन्यास या लघु कथाओं से अलग स्क्रीनप्ले भाषा या विवरण से नहीं बल्कि डायलॉग के चारों ओर आधारित होता है। स्क्रीनप्ले में मूवीज़ छवियों की एक शृंखला होती है, इसलिए आपके स्क्रीनप्ले में छवियों को मर्मभेदी और आकर्षक होना चाहिए।

पटकथा के रचनाकार—हिन्दी भाषा में बनी 'शोले' फ़िल्म की सुप्रसिद्ध पटकथा लेखक जोड़ी सलीम-जावेद ने लिखी थी।

पटकथा लेखन की तकनीक—(i) घटना-दर-घटना, दृश्य-दर-दृश्य, पेज-दर-पेज।

(ii) स्थापित लेखन तरीका।

"पटकथा कुछ ओर नहीं, कैमरे से फ़िल्म के पर्दे पर दिखाये जाने के लिए लिखी गई कथा है।" **—मनोहर श्याम जोशी**

किसी भी फ़िल्म यूनिट या धारावाहिक बनाने वाली कम्पनी को पटकथा तैयार करने के लिए सबसे पहले जो चीज़ चाहिए होती है, वह है कथा। जब कथा ही नहीं होगी तो पटकथा कैसे कही जाएगी। अब प्रश्न यह उठता है कि यह कथा या कहानी हमें कहाँ से मिलेगी? तो इसके कई स्रोत हो सकते हैं। हमारे स्वयं के साथ या आसपास की ज़िन्दगी में घटी कोई घटना, अखबार में छपा कोई समाचार हमारी कल्पना शक्ति से उपजी कोई कहानी, इतिहास के पन्नों से झाँकता कोई व्यक्तित्व या सच्चा किस्सा अथवा साहित्य की किसी अन्य विधा की कोई रचना। मशहूर उपन्यासों, कहानियों पर फ़िल्म या सीरियल बनाने की परम्परा काफ़ी पुरानी है।

अभी कुछ वर्ष पूर्व ही शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास को हिन्दी में तीसरी बार फ़िल्माया गया। इसके अलावा भी हिन्दी के कई जाने-माने लेखकों मुंशी प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, मनू भण्डारी आदि की तमाम रचनाओं को समय-समय पर रूपहले पर्दे पर उतारा गया है। दूरदर्शन तो अक्सर ही साहित्यिक रचनाओं को आधार बनाकर धारावाहिक टेलीफ़िल्मों आदि का निर्माण करवाता रहता है। अमेरिका, यूरोप में तो अधिकतर कामयाब उपन्यास और नाटक फ़िल्म का विषय बन जाते हैं।

फ़िल्म या टीवी की **पटकथा की संरचना** नाटक की संरचना से बहुत मिलती है, अंग्रेज़ी में तो इसे कहते ही स्क्रीनप्ले हैं। नाटक की तरह यहाँ भी पात्र-चरित्र होते हैं, नायक-प्रतिनायक होते हैं, अलग-अलग घटना स्थल होते हैं, दृश्य होते हैं, कहानी का क्रमिक विकास होता है, बद्ध टकराहट और फिर समाधान। ये सब कुछ पटकथा के भी आवश्यक अंग होते हैं। मंच के नाटक और फ़िल्म की पटकथा में कुछ मूलभूत अन्तर भी होते हैं। पहली चीज़ दृश्य की लम्बाई, नाटक के दृश्य अक्सर अधिक लम्बे होते हैं और फ़िल्मों में छोटे-छोटे इसी प्रकार नाटक में आमतौर पर सीमित घटनास्थल होते हैं जबकि फ़िल्म में इसकी कोई सीमा नहीं, हर दृश्य किसी नये स्थान पर घटित हो सकता है। इसकी वज़ह है दोनों माध्यमों में मूलभूत अन्तर, नाटक एक सजीव कला माध्यम है जहाँ अभिनेता अपने ही जैसे जीवन्त दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। सब कुछ वही, उसी वक्त घट रहा होता है, जबकि सिनेमा या टेलीविज़न में पूर्व रिकॉर्डेड छवियाँ एवं ध्वनियाँ होती हैं।

नाटक का पूरा कार्य व्यापार एक ही मंच पर घटित होता है, एक निश्चित अवधि के दौरान। जबकि फ़िल्म या टेलीविज़न की शूटिंग अलग-अलग सेटों या लोकेशनों पर दो दिन से लेकर दो साल तक की अवधि में की जा सकती है। इसलिए नाटक का कार्य, व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या आदि को सीमित रखना पड़ता है लेकिन सिनेमा या टेलीविज़न में कोई ऐसा बन्धन नहीं होता। सबसे बड़ी बात नाटक की कथा का विकास 'सीनियर' मतलब एक रेखीय होता है जो एक ही दिशा में आगे बढ़ता है, जबकि सिनेमा में फ़्लैशबैक या फ़्लैश फ़ॉरवर्ड तकनीकों का इस्तेमाल करके किसी घटना को दिखाते हैं और फ़्लैश फ़ॉरवर्ड में आप भविष्य में होने वाले किसी हादसे को पहले दिखा देते हैं। इन दोनों तकनीकों को हम एक-एक उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं।

पटकथा लिखते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दु

- प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत भी दिया जाना चाहिए।
- पात्रों की गतिविधियों के संकेत भी प्रत्येक दृश्य के प्रारम्भ में देने चाहिए जैसे—रजनी चपरासी को घूर रही है। चपरासी मज़े से स्टूल पर बैठा है। साहब मेज पर पेपरवेट घुमा रहा है। फिर घड़ी देखता है। किसी भी दृश्य का बँटवारा करते समय यह ध्यान रखा जाए कि किन आधारों पर हम दृश्य का बँटवारा कर रहे हैं। प्रत्येक दृश्य के साथ होने की सूचना देनी चाहिए।
- प्रत्येक दृश्य के साथ उस दृश्य के घटनास्थल का उल्लेख अवश्य करना चाहिए जैसे—कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टेण्ड, हवाई अड्डा, सड़क आदि।

  पात्रों के संवाद बोलने के ढंग के निर्देश भी दिए जाने चाहिए; जैसे—रजनी (अपने में ही भुनभुनाते हुए)।
- प्रत्येक दृश्य के अन्त में डिजॉल्व, फ़्रेड आउट, कट्टू जैसी जानकारी अवश्य देनी चाहिए। इससे निर्देशक, ऑडीटर आदि निर्माण कार्य में लगे हुए व्यक्तियों को बहुत सहायता मिलती है।
- पटकथा लिखते समय सर्वप्रथम हमें उन आधारों का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर लेना चाहिए, जिनको लेकर पटकथा लिखी जा रही है। पटकथा ही किसी फ़िल्म या धारावाहिक का मूलाधार होती है। पटकथा के अनुसार ही निर्देशक, अभिनेता, कैमरे के पीछे काम करने वाले तकनीशियनों तक को उनके कार्यक्षेत्र का बोध होता है। पटकथा का आधार है कथा। अत: कथा का चुनाव बहुत ध्यानपूर्वक करना चाहिए। दृश्य छोटे एवं गतिशील होने से कहानी में गति आएगी।

अध्याय — 10 लघु लेखन कार्य

1. स्ववृत्त (बायोडेटा) लेखन और रोजगार सम्बन्धी आवेदन पत्र

स्मरणीय बिन्दु

प्रश्न 1. स्ववृत्त से क्या तात्पर्य है?

उत्तर— स्ववृत्त दो शब्दों से मिलकर बना है 'स्व' और 'वृत्त' अर्थात् अपना परिचय। किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने बारे में सूचनाओं का क्रमशः (सिलसिलेबार) संकलन ही स्ववृत्त कहलाता है। इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है, जो नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छवि प्रस्तुत करें। स्ववृत्त नियोक्ता के मन में एक सकारात्मक धारणा प्रस्तुत करता है।

स्ववृत्त को अंग्रेज़ी में Bio-Data, Resume या Curriculum Vitae कहते हैं। स्ववृत्त का तात्पर्य आत्म विज्ञापन या आत्म प्रशंसा नहीं है, यह Resume किसी आजीविका प्राप्ति के सन्दर्भ में लिखा जाता है। इस पत्र में व्यक्ति पद से सम्बन्धित अपनी योग्यताओं, कार्यानुभव, उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है।

स्ववृत्त के दो पक्ष होते हैं। पहले पक्ष में वह व्यक्ति है जिसको केन्द्र में रखकर सूचनाएँ संकलित की गई होती हैं। दूसरों पक्ष उस व्यक्ति या संस्था का है जिसके लिए या जिसके प्रयोजन को ध्यान में रखकर सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं अर्थात् पहला पक्ष है उम्मीदवार और दूसरा पक्ष है नियोक्ता। एक अच्छे स्ववृत्त को चुंबक की तरह माना जाता है।

प्रश्न 2. स्ववृत्त कैसे लिखा जाए?

उत्तर— **1.** स्ववृत्त में सरल और स्पष्ट भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए।

2. स्ववृत्त का आकार ज़रूरत से अधिक बड़ा या छोटा नहीं होना चाहिए।

3. स्ववृत्त में जानकारी देते समय अपने बारे में बढ़-चढ़कर बातें नहीं बतानी चाहिए।

4. स्ववृत्त साफ़ और सुन्दर ढंग से लिखा होना चाहिए।

5. स्ववृत्त में सूचनाओं को अनुशासित क्रम में लिखना चाहिए।

6. व्यक्तिगत परिचय, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येत्तर गतिविधियाँ इत्यादि का विस्तृत ब्यौरा होना चाहिए। यथा—

परिचय में

— नाम,
— जन्मतिथि,
—उम्र,
—पत्र व्यवहार का पता,
—टेलीफोन नम्बर,
— मोबाइल नम्बर
— ई-मेल इत्यादि लिखे होने चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता में विद्यालय का नाम, बोर्ड या विश्वविद्यालय का नाम, परीक्षा का वर्ष, विषय, प्राप्तांक प्रतिशत तथा श्रेणी का उल्लेख करना चाहिए।

कार्येत्तर गतिविधियों का उल्लेख अन्य उम्मीदवारों से अलग पहचान दिलाने के लिए करना चाहिए।

स्ववृत्त में विज्ञापन में वर्णित योग्यताओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए थोड़ा बहुत परिवर्तन किया जा सकता है।

स्ववृत्त निर्माण की कला से व्यक्ति का मूल्यांकन होता है, जो व्यक्ति अपना मूल्यांकन ठीक प्रकार से करवाना चाहता है, अपनी अहमियत को प्रकट करना चाहता है, उसको स्ववृत्त निर्माण में कुशल होना अति आवश्यक है।

स्ववृत्त स्वयं को विस्तृत रूप से कागज़ पर प्रकट करने का एक माध्यम है। जितना अच्छा स्ववृत्त होगा, उतना ही अच्छा व्यक्ति का मूल्य लगाया जा सकता है। उम्मीदवार के चयन में स्ववृत्त की अहम भूमिका होती है। व्यक्ति के संक्षिप्त मूल्यांकन का सर्वश्रेष्ठ आधार स्ववृत्त को माना गया है।

मुख्य बिन्दु—जन्मस्थान, तिथि शैक्षणिक योग्यता, अतिरिक्त कुशलता विस्तारपूर्वक और नियमबद्ध शैली में लिखा गया स्ववृत्त व्यक्ति के महत्त्व को प्रदर्शित करता है।

स्ववृत्त का महत्त्व या उपयोग—

1. यद्यपि स्ववृत्त में उम्मीदवार के बारे में सभी आवश्यक जानकारियाँ होती हैं फिर भी उसके साथ संलग्न आवेदन पत्र से रोज़गार को लेकर उम्मीदवार की गम्भीरता का पता चलता है।

2. स्ववृत्त में केवल सिलेसिलेबार जानकारियाँ होती हैं, उसमें भाषा का वैयक्तिक स्पर्श नहीं होता जबकि आवेदन पत्र से उम्मीदवार की भाषा, ज्ञान, अभिव्यक्ति क्षमता, व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण का भी पता चलता है।
3. स्ववृत्त में जहाँ नियोक्ता को उम्मीदवार की योग्यता, उपलब्धियों और अनुभव के बारे में पता चलता है, वहीं आवेदन पत्र से उममीदवार के विचारों एवं दृष्टिकोण का पता चलता है, जिससे योग्य उम्मीदवार के चयन में आसानी होती है।

स्ववृत्त के विभाग— स्ववृत्त प्रारूप में चार विभाग होते हैं जैसे—

1. **पहला भाग** भूमिका का होता है, जिसमें उम्मीदवार विज्ञापन से तथा विज्ञापित पद का हवाला देते हुए अपनी उम्मीदवारी की इच्छा प्रकट करता है।
2. **दूसरे भाग में** उम्मीदवार बताता है कि वह विज्ञापन में वर्णित आवश्यकताओं ओर योग्यताओं को पूरा करने में किस प्रकार सक्षम है।
3. **तीसरे विभाग में** उम्मीदवार उस पद और संस्था के प्रति अपनी गम्भीरता और अभिरुचि को व्यक्त करता है।
4. **चौथा विभाग** औपचारिक समापन या उपसंहार का होता है जिसमें आपने (किसी भी पद के लिए) आवेदन किया है।

स्ववृत्त का प्रारूप

- **व्यक्तिगत सूचनाएँ**
  - नाम,
  - पिता का नाम,
  - माता का नाम,
  - जन्मतिथि,
  - वर्तमान पता,
  - स्थायी पता,
  - मोबाइल नम्बर,
  - ई-मेल
  - आधार नम्बर
- **शैक्षणिक योग्यताएँ**

क्रम सं.	परीक्षा का नाम	बोर्ड/ वि.वि./ कॉलेज	परीक्षा के विषय	श्रेणी	प्रतिशत
01.	दसवीं				
02.	बारहवीं				
03.	बी.एस.सी.				
04.	एम.एस.सी.				
05.	प्रोफेशनल डिग्री (बी.बी.ए.)				

- **अन्य सम्बन्धित योग्यताएँ**
  - कम्प्यूटर का ज्ञान एवं अभ्यास (इण्टरनेट, एम.एस. ऑफिस)।
  - हिन्दी, अंग्रेजी के साथ जर्मन भाषा का कार्यसाधक ज्ञान।
- **उपलब्धियाँ**
  - अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार।
  - राजीव गांधी स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता (वर्ष 2002) में प्रथम पुरस्कार।
  - विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम का कप्तान (वर्ष 2003-2004)
- **कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचि**
  - आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों का नियमित पठन।
  - इन्टरनेट सर्फिंग।

- **प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सन्दर्भ**

— (i) श्री रामनाथ—प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (भौतिकी विभाग, दिल्ली वि.वि.)।

— (ii) श्री देवेन्द्र गुप्ता—प्रोफेसर एवं मुख्य नियन्ता (मेरठ वि.वि.)।

तिथि

स्थान हस्ताक्षर

2. शब्दकोश एवं सन्दर्भ ग्रन्थों की उपयोग विधि

स्मरणीय बिन्दु

शब्दकोष एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रन्थ होता है, जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरण निर्देश, अर्थ परिभाषा प्रयोग और पदार्थ आदि का समावेश होता है। शब्दकोष एकस भाषीय, द्विभाषीय या बहुभाषीय हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोषों में शब्दों के उच्चारण के लिए भी व्यवस्था होती है। जैसे—अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या ऑडियो संचिका के रूप में कुछ शब्दकोषों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग-अलग कार्यक्षेत्रों के लिए अलग-अलग शब्दकोष हो सकते हैं; जैसे—विज्ञान शब्दकोष, चिकित्सा शब्दकोष, विधि (कानूनी) शब्दकोष, गणित का शब्दकोष आदि।

सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। सही अभिव्यकित के लिए सही शब्द का चयन आवश्क है। शब्दों और चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक हैं। शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझकर आरम्भिक लिपियों के उदय से पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखा-जोखा रखना शुरू कर दिया था। इसके लिए उसने कोष बनाना शुरू किया। कोष में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है और यह शब्दकोष बन जाता है।

सबसे पहले शब्दकोष अथवा शब्द संकलन भारत में बने, फिर शेष विश्व में, भारत में, प्रजापति कश्यप का 'निघटु' संसार का प्राचीनतम शब्दकोष है। शेष विश्व में। अक्कादियाई संस्कृति का शब्दकोष एक प्राचीन शब्दकोष है।

परिचय

शब्दकोष देखने की विधि—शब्दकोष में सम्मिलित शब्द वर्णमाला के वर्णों के क्रम में व्यवस्थित रहते हैं, अत: शब्दकोष देखने के पूर्व हमें वर्णमाला के ज्ञान के साथ-साथ शब्द का वर्ण-विच्छेद करना सीखना आवश्यक है।

शब्दकोष में शब्दों को इस वर्ण अनुक्रम में दिया जाता है—अं, अ, आं आ, इ, इं, ईं, ई, उं, उ, ऊं, ऊ, ऋ, एं, ए, ऐं, ऐ, ओं, ओ, औं, औ। इसके पश्चात् 'क' से 'ह' तक के वर्ण क्रम के अनुसार।

संयुक्ताक्षरों के विषय में विशेष ध्यान रखने योग्य बातें—यदि मिले हुए वर्ण ऊपर-नीचे लिखे हैं, तो ऊपर वाला वर्ण पहले स्थान पाएगा तथा नीचे वाला वर्ण बाद में स्थान पाएगा एवं संयुक्ताक्षर की मात्रा नीचे वाले वर्णों की मानी जाएगी—

जैसे—(i) शुद्धि = (श् + उ) + (द् + ध + इ)

(ii) प्रार्थना = (प् + र् + आ) + (र् + थ् + अ) + (न् + आ)

वर्ण विच्छेद में मात्रा वाला स्वर सदा ही उस व्यंजन के बाद आता है जिस पर मात्रा लगी हो (भले ही मात्रा पीछे से लगी हो। जैसे—सि = स् + इ, सी = स् + ई आधे अक्षरों से पहले लिखी 'इ' की मात्रा उस अक्षर की न होकर अगले व्यंजन की होती है जैसे—स्थिति + स् + थि + ति।

यदि मिले हुए वर्ण (संयुक्ताक्षर) ऊपर नीचे न होकर बराबर ऊँचाई पर लिखे हैं तो वर्णों का क्रम वही होगा, जो दिखाई दे रहा है।

जैसे—शब्द = श + ब् + द, पम्प = प् + म् + प, द्वार = द् + वा + र (न कि व् + दा + र)।

निम्नलिखित संयुक्ताक्षरों के वर्ण-विच्छेद पर विशेष ध्यान देना चाहिए—

क्ष + क् + ष् + त्र + त् + र् + अ, ज्ञ = ज् + क्ष् + ञ, द्य = द् + य् + अ

अं तथा अ: को स्वरों में नहीं गिना जाता है अत: शब्दकोष में इनके लिए ओ, औ के बाद अलग से खण्ड नहीं होता। अनुस्वार (बिन्दु) तथा अनुनासिक (चंद्रबिन्दु) वाले वर्ण शब्दकोष में सबसे पहले आएँगे। जैसे—'अंकुर' तथा 'अकुलाहट' में से अंकुर पहले स्थान पाएगा, जबकि अकुलाहट बाद में आएगा। इसी प्रकार 'इ' तथा 'ई' में से इं से प्रारम्भ होने वाले शब्द पहले आएँगे तथा इ से प्रारम्भ होने वाले शब्द बाद में। जैसे—इंक व इकहरा में से इंक पहले आएगा तथा 'इकहरा' बाद में आएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ क्या है?

जिस प्रकार 'शब्दकोष में शब्दों के अर्थ दिए होते है, उसी प्रकार सन्दर्भ ग्रन्थों में मानव द्वारा संचित ज्ञान को संक्षित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सन्दर्भ ग्रन्थ कई प्रकार के होते हैं। सन्दर्भ ग्रन्थ का सबसे विशद रूप 'विश्व ज्ञान कोष' है। इसमें मानव द्वारा संचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का संक्षिप्त संकल होता है। सन्दर्भ ग्रन्थों के अन्य महत्वपूर्ण प्रकार हैं 'साहित्यकोष' और 'चरित्र कोष', 'साहित्य कोष' में साहित्यिक विषयों से सम्बन्धित जानकारियाँ संकलित होती हैं। 'चरित्र कोष' में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान आदि क्षेत्रों के महान् व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी संकलित होती है। सन्दर्भ ग्रन्थ गागर में सागर के समान है। जब भी किसी विषय पर तुरन्त जानकारी की आवश्यकता होती है, सन्दर्भ ग्रन्थ हमारे काम आते हैं। सन्दर्भ ग्रन्थों में जानकारियों का सिलसिलेबार संकलन 'शब्दकोष' के नियमों के अनुसार ही होता है।

❑❑

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE